

# गगन



क्रमांक 58

विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र की गृह पत्रिका

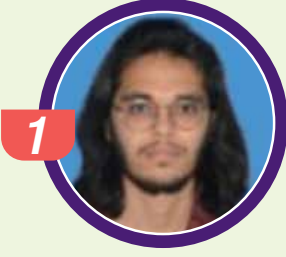
अक्टूबर, 2023- मार्च, 2024



## हिंदी भाषी

### गगन में प्रकाशित लेखों के लिए पुरस्कार

गगन के अप्रैल - सितंबर, 2023 अंक में प्रकाशित रचनाओं के रचनाकारों को निम्नानुसार नकद-पुरस्कार प्रदान किए गए



1

**संकल्प बिश्रोई**  
वैज्ञा/इंजी, एएसओई  
यहाँ चेहरों पर नकाब बहुत हैं



1

**नितिन सिंह रघुवंशी**  
वैज्ञा/इंजी, एसआर  
छोटा लक्ष्य



2

**विपिन कुमार यादव**  
वैज्ञा/इंजी, एसपीएल  
सब सो जाओ



2

**वेद प्रकाश शर्मा**  
वैज्ञा/इंजी., एमएमई  
चंद्रयान 3



3

**पवन कुमार मंगल**  
वैज्ञा./इंजी., एमवीआइटी  
ई-पेपर डिस्प्ले तकनीक :  
एक परिचय



3

**पूरन सिंह**  
वैज्ञा/इंजी, एसपीआरई  
द्रष्टा

## हिंदीतर भाषी



1

**अक्षया मुरलीधरन**  
डॉ. संतोष जी, वैज्ञा/इंजी, की भांजी  
माँ



2

**स्नेहा एन**  
वरि. सहायक, पीजीए  
अशक्तता एक अवस्था है, बीमारी नहीं

पुरस्कार प्राप्त सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाइयां !!!



## संपादकीय

### संरक्षक

डॉ. एस उणिक्कणन नायर

### मुख्य संपादक

डॉ. पंकज प्रियदर्शी

### संपादक मंडल

डॉ. तरुण कुमार पंत

श्री उल्लेख पांडेय

श्रीमती लक्ष्मी प्रीति मणि

श्रीमती पायल अग्रवाल

श्री आसिर नेसा दास

श्री राकेश रंजन

श्री एम जी सोम शेखरन नायर

श्रीमती लक्ष्मी जी

### संपादन सहयोग

श्रीमती सी वी विनीता

श्रीमती चंदना राजेश

श्री कृष्ण मुरारी

### प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार

लेखकों/रचनाकारों के अपने हैं।

यह आवश्यक नहीं कि उनसे

संपादक मंडल की सहमति हो।

### विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र

तिरुवनंतपुरम-695022

दूरभाष : 2564021, 4189, 4120

फैक्स : 0471 2564022

ई-मेल : rajbhasha@vssc.gov.in

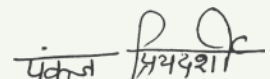
गगनयान मानवयुक्त अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण मीलस्तंभ, टीवी-डी1 अभियान, “पीएसएलवी सी-58, जीएसएलवी-एफ14/इनसैट-3डीएस अभियान, आरएलवी एलईएक्स-02 अभियान तथा अन्य देशों की प्रमोचन संबंधी खबरों के साथ इस बार ‘गगन’ में आपको काफी विविधता नज़र आएगी।

अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी से जुड़े जटिल कार्यों के बीच राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार व विकास के लिए वैज्ञानिक तथा तकनीकी/प्रशासनिक क्षेत्र में कार्यरत कर्मों अपना कीमती समय निकाल रहे हैं, यह वास्तव में अभिनंदन योग्य है। प्रयास सराहनीय होने के साथ-साथ अनुकरणीय भी है।

अंक में हमने विविध विषयों को समेकित करने का प्रयास किया है। मानव जाति के भोग-विलास का दुष्परिणाम-‘ग्लोबल वार्मिंग’; आज की विपत्त-मोबाइल की लत से उत्पन्न समस्याएं; नन्हें कलम से मासूम-सी कविता; सोचने पर मज़बूर करनेवाली अन्य कविताएं, कहानियां, अंतरिक्ष प्रश्नोत्तरी, चुटकुले इत्यादि भी सम्मिलित हैं। राजभाषा संबंधी गतिविधियों की झलक भी आपको इसमें दिखेगी।

पत्रिका को प्रभावी बनाने हेतु सहयोग एवं समर्थन प्रदान किए सभी लेखकों के प्रति संपादक मंडल अपना आभार व्यक्त करता है। पाठकों की प्रतिक्रिया ही पत्रिका की गुणता को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगी। अतः आपसे प्रार्थना है कि अपने विचारों एवं सुझावों से हमें लाभान्वित करें।

सादर।

  
पंकज प्रियदर्शी

बाघ के शिकार के विषय पर आधारित पुलिक्कली (टाइगर डान्स) केरल राज्य की एक जीवंत मनोरंजक लोक कला है। यह राज्य की सांस्कृतिक विरासत का एक अभिन्न अंग है। यह वार्षिक फसल उत्सव ओणम के अवसर पर लोगों का मनोरंजन करने के लिए प्रशिक्षित कलाकारों द्वारा किया जाता है। ओणम के चौथे दिन (नालाम ओणम या चतयम) कलाकार अपने शरीर को बाघ और तेंदुए की तरह चमकीले पीले, लाल और काले रंगों में रंगते हैं, अपने पेट को हिलाते हुए तकिल, उडुक्कु और चेंडा जैसे पारंपरिक ताल वाद्यों के लय पर नृत्य करते हैं।

पुलिक्कली की उत्पत्ति लगभग 200 वर्ष पुरानी है। कहा जाता है कि कोचीन के तत्कालीन महाराजा राम वर्मा शक्तन तंपुरान ने इस लोक कला की शुरुआत की थी। बाघ के समान विशेष कदमों के साथ कलाकार बाघ के रूप में सजकर इस कलारूप का प्रदर्शन करते थे, जिसे उस समय ‘पुलिकेट्टिक्कली’ के नाम से जाना जाता था और स्थानीय लोगों द्वारा उसका अत्यधिक आनंद लिया जाता था। त्रिश्शूर में इसी की याद में पुलिक्कली आयोजित किया जाता है।

साधारणतया पुरुष और बच्चे इस कलारूप का प्रदर्शन करते हैं। वर्ष 2016 में पहली बार 3 महिलाएं त्रिश्शूर में पुलिक्कली में भाग ली थीं।



5

टीवी - डी1  
अभियान



7

पीएसएलवी-  
सी 58 ने  
सटीकता से  
एक्सपोसैट  
को कक्षा में  
स्थापित किया



8

जीएसएलवी-  
एफ14/  
इनसैट-  
3डीएस  
अभियान



18

मेरा प्यारा  
मिट्टू भाई



20

क्या आप  
जानते हैं ?



21

पतंग



27

सुकून:  
माता-पिता

आरएलवी एलईएक्स-02 अभियान .....	9
अंतरिक्ष गमन क्षमता रखनेवाले राष्ट्रों के प्रमोचन संबंधी समाचार .....	10
ग्लोबल वार्मिंग .....	15
बच्चों में मोबाइल गेम की लत .....	16
सावरिया .....	18
क्या आप जानते हैं ? हाइलाइट पेन के इतिहास के बारे में .....	19
नया .....	20
सबसे कुशल कर्मयोगी की खोज .....	22
ज़िंदगी का टेट्रिस खेल .....	23
वेस्ट इंडीज़: क्रिस्टोफर कोलंबस से क्रिकेट तक .....	24
सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि .....	28
संघर्ष .....	30

व्यापार-ए-व्यवहार .....	30
परिश्रम है कल्पवृक्ष .....	31
नारी शक्ति का सम्मान .....	33
हमारा आश्चर्यजनक व्यवहार .....	34
सूरज और चाँद से सीख .....	37
बचपन .....	38
हर कोई सीखता है कुछ खोकर .....	39
वर्ष 2023 के दौरान वीएसएससी में आयोजित विविध कार्यक्रम .....	40
राजभाषा मंजरी .....	45
हिंदी वर्ग पहली .....	49
राजभाषा प्रश्नोत्तरी .....	49
हंसी के गुब्बारे .....	50
अंतरिक्ष प्रश्नोत्तरी .....	50
आपकी प्रतिक्रिया... हमारी प्रेरणा .....	51

# टीवी - डी1 अभियान

मानवानुकूलित प्रमोचन यान (एचएलवीएम3) के वायुमंडलीय उड़ान शासन के अंदर कोई भी अप्रत्याशित आवश्यकता उत्पन्न होने पर कर्मिदल की सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु कर्मिदल बचाव प्रणाली (सीईएस) की संकल्पना की गई है। 21 अक्टूबर, 2023 को 10.00 बजे कर्मिदल बचाव प्रणाली का 1.2 माख संख्या पर सफल उड़ान-मध्य विफलन प्रदर्शन, गगनयान मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम का एक मुख्य मीलस्तंभ है। इससे पहले, पीएटी-01 अभियान में प्रमोचन मंच विफलन स्थिति के लिए सीईएस निष्पादन का मूल्यांकन किया गया था। तथापि, सर्वाधिक गतिक दाब (क्यूमैक्स) तथा अतिध्वनिक गति शासन आदि जैसे विभिन्न क्रांतिक उड़ान घटनाओं के लिए इसका वैधीकरण किया जाना है। सीईएस उड़ान-मध्य विफलन के प्रदर्शन हेतु नव विकसित परीक्षण यान, बेहतर विश्वसनीयता सुनिश्चित करते हुए, नवीकृत विकास इंजन के साथ एल-40 नोदन प्रणाली वास्तुकला का सर्वाधिक उपयोग करके विकास हेतु समय एवं लागत को समग्र रूप से कम करनेवाला एक द्रव नोदित एकल चरण है।

टीवी-डी1 अभियान एफएलपी, एसडीएससी से 21 अक्टूबर, 2023



को 10.00 बजे हुआ। परीक्षण यान ने 1.2 माख संख्या तथा 11.7 किलोमीटर की ऊंचाई तक सीईएस तथा सीएम का वहन किया। वांछित स्थितियां प्राप्त करने पर विकास इंजन को बंद किया गया तथा एचईएम मोटरों की सहायता से सीईएस को यान से ले जाया गया। सीएमएफ-सीएसआइए ममैन बैंड तथा सीएम-एसएम पृथक्करण



प्रणाली प्रकार्यात्मक रहे तथा टीवी-सीईएस पृथक्करण आदेश के पश्चात् 200ms पर ग्रिड फिनों को प्रस्तरित किया गया। अपभू (तुंगता~16.8 किलोमीटर) पर सीजेएम फायरिंग के माध्यम से सीएम को सीईएस से अलग किया गया। सीएम का पुनर्विन्यास  $AoA < 90^\circ$  पर किया गया, जिसके पश्चात् शीर्ष आवरण पृथक्करण तथा सीएस के स्थिरीकरण एवं मंदन के लिए ड्रोग पैरशूटों के प्रस्तरण किए गए। सीएम के 2.5 किलोमीटर की ऊंचाई तक पहुंच जाने पर ड्रोग पैरशूटों को विमोचित किया गया तथा पाइलट शूटों की सहायता से मुख्य पैराशूटों को प्रस्तरित किए गए। मुख्य पैराशूटों ने सीएम को ~7.5 मीटर/सेकेंड तक के टचडाउन वेग तक मंदित किया।

### टीवी - डी1 अभियान से मुख्य निष्कर्ष

- आरोहण चरण के दौरान 1.2 माख तक परीक्षण का यान निष्पादन, अप्रघातन मुक्त एवं स्थिर निकट नामीय निष्पादन का प्रदर्शन करता है; अतः यह अनुपम यान

संरूपण उड़ान-योग्य है। अनुपम वायुगतिक डेटा तथा डीएपी अभिकल्पना उत्पन्न करने हेतु अपनाई गई कार्यविधि अच्छी पाई गई। सभी वास्तविक काल निर्णय (आरटीडी) उड़ान-पूर्व पूर्वानुमानों के अनुसार हुए। नवीकृत एआर6 विकास इंजन एकीकृत नियंत्रण प्रवर्तक प्रणाली, शीत गैस आरसीएस, संरचनात्मक प्रणाली, धात्विक चल फिन का निष्पादन सामान्य था।

- सीईएस संरूपण उड़ान के एचईएम जेट-ऑन एवं जेट-ऑफ प्रावस्थाओं के दौरान पर्याप्त स्थैतिक स्थिरता प्रदर्शित करता है। वायुगतिकीय डेटा उत्पन्न करने हेतु अपनाई गई क्रियाविधि अच्छी है। उड़ान-मध्य ग्रिड फिन प्रस्तरण का निष्पादन उड़ान-पूर्व पूर्वानुमान के अनुसार हुआ। बचाव मोटर्स (एचईएम एवं सीजेएम) का निष्पादन सामान्य था। सभी पृथक्करण प्रणालियों का निष्पादन सामान्य एवं संतोषजनक रहा।
- सीएम का पुनर्विन्यास प्रत्याशितानुसार हुआ। ड्रोग शूट के उच्च तुंगता प्रस्तरण का प्रदर्शन किया गया और निष्पादन संतोषजनक रहा। सीएम के टचडाउन अभिविन्यास तथा वेग पूर्वानुमान/नामीय के करीब है। टीवी-डी1 अभियान में सीएम सीधीकरण प्रणाली (सीएमयूएस) को कार्यान्वित नहीं किया गया था, अतः सी-स्टेट स्थितियों के कारण टचडाउन के पश्चात् सीएम प्रतिवर्तित हो गया।
- टीवी-सीईएस, सीएम-सीईएस तथा एसीएस जैसी क्रांतिक पृथक्करण घटनाओं के दौरान पृथक्करण गतिकीय विश्लेषण हेतु अस्थिर गतिमान पिंड सीएफडी अनुकरणों के उपयोग करने की क्रियाविधि का वैधीकरण किया गया।
- उच्चतर गतिकीय परिस्थितियों के अधीन भी सभी नौसंचालन प्रणालियों (नाविक/जीपीएस की सहायता के साथ टीवी, सीएम पर) का निष्पादन बढ़िया रहा।

टचडाउन के पश्चात् पुनःप्राप्ति प्रचालन सुगम एवं निर्दोष थे तथा सीएम को सुरक्षित रूप से पुनःप्राप्त किया गया जिससे यह साबित हुआ कि अभिकल्पित प्रक्रिया पर्याप्त था तथा प्राप्त प्रशिक्षण संतोषजनक है।

टीवी-डी1 अभियान का अभियान निदेशक, शिवकुमार एस थे तथा श्री शिवमुरुगन टी, यान निदेशक।

●●●

आभार: टीम टीवीडी

# पीएसएलवी-सी 58 ने सटीकता से एक्सपोसैट को कक्षा में स्थापित किया



वर्ष 2024 की प्रथम तारीख को इसरो के वर्कहॉर्स ने भारत के एक्सपोसैट को निर्धारित कक्षा में स्थापित किया। पीएसएलवी-डीएल संरूपण (दो स्ट्रैप-ऑन मोटरो के साथ) में 01 जनवरी, 2024 को 09.10 बजे (भा.मा.स.) श्रीहरिकोटा के प्रथम प्रमोचन मंच (एफएलपी) से इस प्रमोचन यान का भव्य उत्थापन हुआ। 468 किलोग्राम एक्सपोसैट को 5.993° (ओडी डेटा) नति सहित 654.718 x 649.433 किलोमीटर की कक्षा में अंतःक्षेपित किया गया।

यह पीएसएलवी का 60वां अभियान था तथा उपग्रह, प्रमोचन यान एवं पीएसएलवी कक्षीय परीक्षण मॉड्यूल-3 (पीओईएम-3) में परीक्षण संबंधी कई विशेष पहलुओं से युक्त था।

एक्सपोसैट को अपनी निर्धारित कक्षा में अंतःक्षेपित करने के उपरांत पीएसएलवी-सी 58 के चौथे चरण (पीएस4) को चरण का शीघ्र पुनःप्रवेश सुनिश्चित करने हेतु निम्न कक्षा (350 किलोमीटर वृत्ताकार) में ले जाया गया था। इस निम्न कक्षा में, पीएस4 में मलबा न्यूनीकरण की एक नई विशेषता कार्यान्वित की गई: अतिरिक्त नोदक का निपटान। चरण में न्यूनतम विशोभ के साथ पीएस4 के मुख्य इंजनों के माध्यम से कुल मिलाकर करीब 72 किलोग्राम नोदकों का निपटारा किया गया। नोदक निपटान के पश्चात्, विभिन्न अभिकरणों द्वारा नौ प्रयोगों

को चलाना संभव बनाते हुए पीएस4 ने पीएसएलवी कक्षीय परीक्षण मॉड्यूल (पीओईएम) के रूप में कार्य किया। ईंधन सेल, Si-Gr आधारित उच्च शक्ति 10 Ah लिथियम-आयन बैटरी, हरित नोदक, विद्युत नोदन, धूल कण प्रयोग, अंतरिक्ष-आधारित पराबैंगनी विकिरण सूचकांक मापन आदि पर आधारित प्रक्षेपक जैसी कुछ नई प्रौद्योगिकियों का सफल प्रदर्शन पीओईएम विधा में शामिल है।

एक्सपोसैट उपग्रह, ब्लैक होल, न्यूट्रॉन तारे, सक्रिय गैलेक्सीय नाभिक, पल्सार पवन निहारिका आदि जैसे दीप्त खगोलीय एक्स-रे स्रोतों की विविध गतिकी के अध्ययन हेतु भारत का पहला समर्पित ध्रुवणमापन अभियान है। कक्षीय अंतःक्षेपण के बाद उपग्रह की सुस्थिति की पुष्टि की गई। तत्पश्चात्, एक्सपोसैट का एक्सएसपेक्ट (एक्स-रे स्पेक्ट्रमिकी तथा कालन) प्रदायभार के निष्पादन की जांच कैस्सियोपिया ए (कैस ए) सुपरनोवा अवशेष से उसकी प्रथम रश्मि का प्रग्रहण करके की गई।

पीएसएलवी-सी 58/एक्सपोसैट अभियान के अभियान निदेशक, डॉ. एम जयकुमार थे। श्री पी दामोदरन तथा श्री जोयस जोस क्रमशः यान निदेशक तथा सह यान निदेशक थे। श्री बृन्दाबन महतो, उपग्रह निदेशक थे।



आभार: पीएसएलवी परियोजना

# जीएसएलवी-एफ14/इनसैट-3डीएस अभियान



भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में जीएसएलवी-एफ14 का सफल प्रमोचन 17 फरवरी, 2024 को भारतीय मानक समय 17.35 बजे किया गया तथा इनसैट-3डीएस अंतरिक्षयान को भूतुल्यकाली अंतरण कक्षा (जीटीओ) में अंतःक्षेपित किया गया। भारत के भूतुल्यकाली उपग्रह प्रमोचन यान (जीएसएलवी) की यह 16वीं उड़ान थी तथा क्रायो चरण के साथ 10वीं उड़ान। यह 15 टन क्रायो चरण के साथ चौथी प्रचालनात्मक उड़ान तथा 04m ओपीएलएफ संरूपण के साथ तीसरी उड़ान भी थी।

जीएसएलवी-एफ14/इनसैट-3डीएस अभियान को सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र, श्रीहरिकोटा के द्वितीय प्रमोचन मंच से पूरा किया गया। योजना के अनुसार भारतीय मानक समय 17.35 बजे यान का उत्थापन हुआ तथा करीब 19 मिनट की उड़ान के पश्चात् इनसैट-3डीएस उपग्रह को सटीकता से भूतुल्यकाली अंतरण कक्षा में अंतःक्षेपित किया गया।

जीएसएलवी-एफ14 यान का संरूपण, 29 मई, 2023 को उड़ान भरनेवाले जीएसएलवी-एफ12 के समान है। 04m ओपीएलएफ में बड़े आकार का अंतरिक्षयान रखा जा सकता है तथा आंतरिक वातावरण सुखमय है। आगामी जीएसएलवी-एफ15-एनआइएसएआर अभियान के कार्यान्वयन में सही अर्थों में यह एक महत्वपूर्ण कदम होगा।

जीएसएलवी-एफ14 ओपीएलएफ निजी उद्योग (मेसर्स एल एवं टी) से प्राप्त पहला हार्डवेयर है तथा वर्धित प्रमोचन आवृत्ति की अपेक्षाओं को पूरा करने हेतु यह अतिरिक्त स्रोत अवश्य सहायक सिद्ध होगा। भारतीय मौसमविज्ञान विभाग जैसे भू-विज्ञान मंत्रालय के विविध विभाग तथा अन्य अभिकरण एवं संस्थान उन्नत मौसम पूर्वानुमान तथा मौसमविज्ञान संबंधी अन्य सेवाएं प्रदान करने हेतु इनसैट-3डीएस उपग्रह डेटा का उपयोग करेंगे।

श्री टोमी जोसफ ने अभियान निदेशक के रूप में जीएसएलवी-एफ14 अभियान का नेतृत्व किया जबकि श्री कार्तिकेयन बी तथा श्री ग्लैडविन जे ने क्रमशः यान निदेशक तथा सह यान निदेशक के रूप में कार्य किया।

●●●

आभार: जीएसएलवी परियोजना

# आरएलवी एलईएक्स-02 अभियान: एक शानदार सफलता

22 मार्च, 2024 को वैमानिकी परीक्षण रेंज (एटीआर), चित्रदुर्ग, कर्नाटक में पुनरुपयोगी प्रमोचन यान स्वायत्त अवतरण अभियान (आरएलवी एलईएक्स-02) को सफलतापूर्वक पूरा किया गया। भारतीय मानक समय पूर्वाह्न 6:28 बजे भारतीय वायु सेना के चिन्नूक हेलीकॉप्टर में अधोमुख भार की तरह आरएलवी को 4.5 किलोमीटर (एमएसएल के ऊपर) की ऊंचाई पर ले जाया गया। पूर्वनिर्धारित विमोचन स्थितियों (पिलबॉक्स प्राचल) को प्राप्त किए जाने पर, आरएलवी अभियान प्रबंधन कंप्यूटर आदेश के आधार पर, आरएलवी को 4.0 किलोमीटर की डाउन रेंज पर मध्याकाश में (रनवे की केंद्र रेखा से 150 मीटर हटकर) स्वतः विमोचित किया गया। आरएलवी की विमोचन स्थितियों में स्थिति, वेग, तुंगता, पिंड दूरें आदि सहित 10 प्राचल शामिल थे। एकीकृत नौसंचालन, निर्देशन एवं नियंत्रण प्रणाली का उपयोग करते हुए आरएलवी ने तब उपगमन तथा अवतरण युक्तिचालनों का निष्पादन किया तथा एटीआर एयर स्ट्रिप पर भारतीय मानक समय पूर्वाह्न 7:06:59 बजे स्वायत्त अवतरण पूरा करते हुए आरएलवी कार्यक्रम का एक और मीलस्तंभ पार किया। 325 किलोमीटर/घंटे की एलईएक्स-01 के अवतरण

वेग को पार करते हुए इसका अवतरण वेग 93.76 मीटर/सेकंड (337.5 किलोमीटर/घंटा) था, जो कि भारत के किसी भी रनवे पर किया गया सबसे तेज़ समानव/मानवरहित अवतरण था। एलईएक्स-02 अभियान की सफल पूर्ति से इसरो ने नोस कैप, एयरफ्रेम संरचनाएं एवं नियंत्रण पृष्ठ, एविओनिकी पैकेज, संवेदक, नियंत्रण प्रवर्तन प्रणाली तथा अवतरण गियर प्रणाली जैसी उड़ान प्रणालियों के पुनरुपयोग का प्रदर्शन किया है। इसरो की टीम के साथ आइएएफ, सीईएमआइएलएसी, एडीई तथा एडीआरडीई ने इस अभियान में अपना योगदान दिया। आइएएफ दल ने इसरो की टीम के साथ मिलकर कार्य किया तथा एकदम सही विमोचन स्थितियां प्राप्त करने हेतु कई बार परिक्रमा की गई।

श्री मुत्तुपांडियन जे., परियोजना निदेशक, आरएलवी, अभियान निदेशक थे। इस एलईएक्स-02 अभियान के लिए श्री बी कार्तिक, उप परियोजना निदेशक, आरएलवी, यान निदेशक तथा श्री एस महेंद्रन, उप परियोजना निदेशक, आरएलवी, यान सह-निदेशक थे।

आभार:आरएलवी परियोजना



# अंतरिक्ष गमन क्षमता रखनेवाले राष्ट्रों के प्रमोचन संबंधी समाचार

## यूएलए एटलस 5 ने पहला प्रोजेक्ट कूपर उपग्रहों का प्रमोचन किया

आगामी छः वर्षों में बनाने एवं तैनात करने हेतु अमेज़ॉन द्वारा योजनाबद्ध 3,200 से अधिक प्रोजेक्ट कूपर ब्रोडबैंड उपग्रहों के लिए युनाइटेड लॉन्च एलाइन्स ने 6 अक्टूबर को दो आदि प्रारूपों (Prototype) का प्रमोचन किया।



आभार: यूनाइटेड लॉन्च अलयन्स

उपग्रहों का वहन करते हुए फ्लोरिडा के केप कैनावरल स्पेस फॉर्स स्टेशन के स्पेस लॉन्च कॉम्प्लेक्स -41 से अपराह्न 02.06 बजे एटलस 5 रॉकेट ने अपनी उड़ान भरी और उत्थापन के 18 मिनट के बाद निम्न भू कक्षा में उपग्रहों को उतारा।

यह एटलस 5 का 99वां प्रमोचन था और अप्रैल 2010 में प्रथम प्रमोचन के बाद 501 संरूपण में यह उसकी आठवीं उड़ान थी।

अमेज़ॉन ने बताया है कि रेडमोन्ड, वाशिंगटन में स्थित इसके अभियान प्रचालन केंद्र ने कूपरसैट -2 के साथ प्रथम संपर्क की पुष्टि अपराह्न 2.43 बजे की और उसके नौ मिनट बाद कूपरसैट-1 के साथ प्रथम संपर्क प्राप्त किया।

कूपरसैट-1 और कूपरसैट -2 अमेज़ॉन को आगामी वर्ष में पूरे पैमाने पर उत्पादन प्रमोचन प्रारंभ होने से पहले 500 किलोमीटर की तुंगता से प्रोजेक्ट कूपर के लिए अंतरिक्ष एवं भू प्रणालियों का परीक्षण करने हेतु सक्षम बनाते हैं।

## नासा ने किया धातुओं की दुनिया के लिए साइके अभियान का प्रमोचन

13 अक्टूबर को संपन्न फाल्कन हेवी के सफल प्रमोचन के बाद नासा का एक अंतरिक्षयान धात्विक मुख्य मेखला (main asteroid belt) के क्षुद्रग्रह की ओर बढ़ रहा है।



आभार: जोर्डन सिरोंके

स्पेस एक्स फाल्कन हेवी रॉकेट ने फ्लोरिडा के केन्नडी स्पेस सेंटर से 14:19:43 यूटीसी पर उड़ान भरी। उत्थापन के 62 मिनट के बाद उपरि चरण से इसका प्रदायभार - नासा का साइके अंतरिक्षयान - पृथक हो गया। फाल्कन हेवी का यह आठवां प्रमोचन था, लेकिन नासा के लिए किया गया इस रॉकेट द्वारा प्रथम प्रमोचन।

नासा ने बताया कि नियंत्रकों ने अंतरिक्षयान के साथ दो-तरफा संचार स्थापित किया है, जिससे प्रारंभिक प्रमोचनोत्तर कमीशनिंग के दौरान आंतरिक्षयान अच्छी स्थिति में होने की बात की पुष्टि की गई।

साइके खोज श्रेणी का ग्रहीय विज्ञान अभियान है जिसका लक्ष्य स्थान है मुख्य क्षुद्रग्रहीय मेखला में विद्यमान एक पिंड जिसे साइके ही कहा जाता है। यह क्षुद्रग्रह मुख्यतः धातु से बना है और यह किसी बड़े पिंड का कोर हो सकता है जिसकी बाह्य परतें छिली गई हैं।

## वेगा ने किया एक दर्जन छोटे उपग्रहों का प्रमोचन

वेगा रॉकेट ने 09 अक्टूबर 2023 को एक दर्जन छोटे उपग्रहों का सफल प्रमोचन किया। फ्रेंच गयाना के काउरी के यूरोपीयन स्पेस पोर्ट से 01:36 यूटीसी पर वेगा रॉकेट ने उड़ान भरी। प्रमोचन वास्तव में 7 अक्टूबर को तय किया गया था। कंपनी ने 8 अक्टूबर को प्रमोचन पुनःनिर्धारित किया, लेकिन यान पर जांचों को पूरा करने के लिए उसे एक और दिन के लिए टाला गया।

इस प्रमोचन के सबसे बड़े दो प्रदायभार थे थियोस-2 और फॉर्मोसैट-7R/ट्राइटन, दोनों को उत्पादन के लगभग 55 मिनट बाद 600 और 617 किलोमीटरों के बीच की सूर्य-तुल्यकाली कक्षाओं में रखा गया।



417 किलोग्राम वाले थियोस-2 को थाइलैंड के जियो-इन्फोरमैक्टिस एंड स्पेस टेकनॉलजी डेवेलोपमेंट एजेंसी के लिए एयरबस डिफेंस एंड स्पेस द्वारा बनाया गया था। यह 15 साल पुराने थियोस-1 के लिए अविच्छिन्न सेवा प्रदान करते हुए 0.5 मीटर तक के विभेदन वाले प्रतिबिंबिकी प्रदान करेगा।

फॉर्मोसैट-7R/ट्राइटन का निर्माण ताइवान स्पेस एजेंसी द्वारा किया गया था और प्रचालन भी वह ही करेगी। 241 किलोग्राम भारवाला यह उपग्रह, मौसम भविष्यवाणी में उपयोग हेतु नौसंचालन उपग्रहों से प्राप्त रेडियो आच्छादन डेटा को एकत्रित करेगा

वेगा ने 3U से 12U तक के रेंज के आकारवाले 10 गौण प्रदायभारों, क्यूबसैटों का वहन किया। विविध यूरोपीय विकासकर्ताओं के उपग्रह मुख्यतः प्रौद्योगिकी प्रदर्शन के प्रयोजनों के लिए हैं जिनमें यूरोपीयन स्पेस एजेंसी और यूरोपीयन यूनियन द्वारा समर्थित उपग्रह भी शामिल हैं।

## स्पेसएक्स ने किया नवां समर्पित राइडशेयर अभियान का प्रमोचन

स्पेसएक्स ने 11 नवंबर को समर्पित स्मॉलसैट राइडशेयर अभियानों की श्रृंखला के नौवें भाग में 100 से अधिक उपग्रहों का प्रमोचन किया, जो कि उस कार्यक्रम की नवीनतम उड़ान है, जिसने संपूर्ण वाणिज्यिक अंतरिक्ष उद्योग में प्रसन्नता और अवहेलना दोनों उत्पन्न की है।

कैलिफोर्निया के वैंडेनबर्ग स्पेस फॉर्स बेस से 18:49 यूटीसी पर ट्रॉन्सपोर्टर -9 अभियान के लिए फॉल्कन 9 ने उड़ान भरी। जून में प्रमोचित ट्रॉन्सपोर्टर -8 सहित पूर्ववर्ती 11 अभियानों को प्रमोचित करनेवाले अभिवर्धक उत्पादन के साढ़े सात मिनट बाद प्रमोचन स्थान पर वापस अवतरण किया।



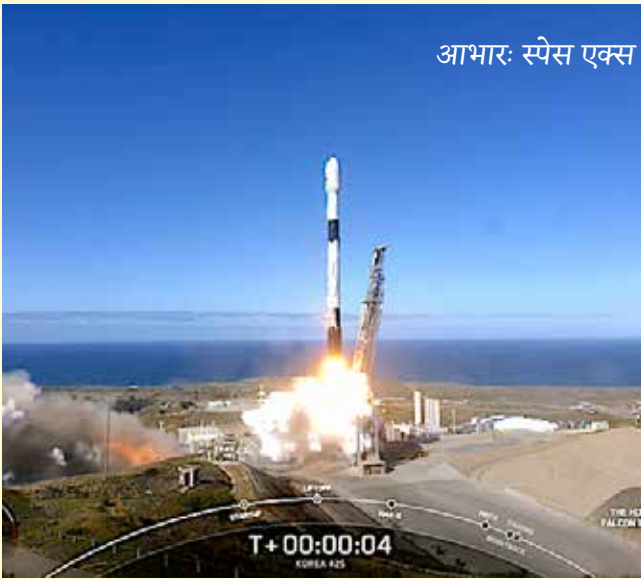
ट्रॉन्सपोर्टर -9 ने 90 प्रदायभारों का वहन किया जिनको आधे घंटे के अंदर तैनात किया गया। इन प्रदायभारों में कई कक्षा अंतरण यान भी थे जो बाद में अपने उपग्रहों को तैनात करेंगे। इनको भी मिलाने पर प्रमोचित कुल उपग्रहों की संख्या 110 से अधिक हो जाती है।

ट्रॉन्सपोर्टर अभियान ने पूरे वाणिज्यिक अंतरिक्ष उद्योग में ज़बरदस्त प्रतिक्रियाएं प्राप्त की हैं। उपग्रह प्रचालक और राइडशेयर प्रमोचन दलालों ने नियमित रूप से एवं कम कीमत में अंतरिक्ष तक पहुंच संभव बनाने के लिए उनकी सराहना की, विशेषकर तब जब दूसरे प्रमोचन प्रदायकों से सीमित विकल्प उपलब्ध हैं।

यद्यपि छोटे प्रमोचन यानों के विकासकर्ताओं ने विवाद बनाया है कि उनके यानों से काफी निम्न प्रति किलोग्राम लागतों पर प्रमोचन सेवाएं देकर ट्रॉन्सपोर्टर अभियानों ने उनके कारोबार मॉडलों को कम दामों पर कर दिया है।

स्पेसएक्स को अपनी ट्रांसपोर्टर सेवाओं के लिए ज़बरदस्त मांग देखने को मिलती है। कंपनी की ऑन-लाइन बुकिंग प्रणाली अक्टूबर 2025 में होनेवाले ट्रांसपोर्टर अभियानों पर सूर्य-तुल्यकालिक कक्षा में प्रमोचन करने का सबसे पहला अवसर दिखाती है। कंपनी ने अगस्त में बैडवैगन नामक मध्य-नति कक्षाओं में राइडशेयर अभियानों की एक नई लाइन की घोषणा की, जो वर्ष 2024 में शुरू होगी। बैडवैगन अभियान के लिए उपलब्ध सबसे पहला अवसर नवंबर 2024 है।

## स्पेसएक्स ने किया 25 लघु उपग्रहों के साथ कोरिया 425 गोपनीय अभियान का प्रमोचन



कैलिफोर्निया के वैंडेनबर्ग स्पेस फॉर्स बेस के स्पेस लॉन्च कॉम्प्लेक्स 4 ईस्ट (एसएलसी-4ई) से 1 दिसंबर शुक्रवार को पूर्वाह्न 10.19 बजे पीटी पर फ़ॉल्कन 9 ने निम्न-भू कक्षा में कोरिया 425 अभियान का प्रमोचन किया। इस अभियान में ऑन-बोर्ड कुल 25 अंतरिक्षयान थे।

यह, दक्षिण कोरिया के डिफेन्स अक्यूसिशन प्रोग्राम एड्मिनिस्ट्रेशन (डीएपीए) के पांच सर्वेक्षण उपग्रहों में से प्रथम उपग्रह का प्रमोचन है। विद्युत प्रकाशीय अवरक्त (ईओ/आइआर) दूरबीनवाले इस उपग्रह का प्रमोचन \$52 मिलियन की लागत पर किया गया। अन्य चार संश्लेषी द्वारक रेडार (एसएआर) उपग्रहों का प्रमोचन बाद में किया जाना है।

कोरियन एर्जेसी फॉर डिफेन्स डेवलपमेन्ट (एडीडी) और कोरिया एयरोस्पेस रिसर्च इन्स्टिट्यूट (केएआरआई) ने कोरिया एयरोस्पेस इन्स्टिट्यूट (केएआई), हन्वा सिस्टम्स और थेल्स एलेनिया स्पेस से प्राप्त इनपुट के साथ इस परियोजना का नेतृत्व किया।

## वाणिज्यिक चीनी रॉकेट ने किया लघु प्रत्यावर्तनीय अंतरिक्षयान का कक्षा में प्रमोचन

Di'er-1 उपग्रह वैज्ञानिक प्रदायभार ले जा रहा है तथा पुनः प्रवेश प्रौद्योगिकियों का परीक्षण कर सकता है।

चीन का वाणिज्यिक प्रमोचन फर्म आइस्पेस एक बार फिर उपग्रहों को कक्षा में अंतःक्षेपित कर रहा है।

कंपनी का छटा हाइपरबोला-1 रॉकेट ने उत्तरपश्चिम चीन के जिनक्वान सैटलाइट लॉन्च सेन्टर से 17 दिसंबर को 07:00 यूटीसी पर उड़ान भरी।



पुनःप्राप्ति योग्य Di'er-1 (डीईएआर- 1) परीक्षण उपग्रह ऑन-बोर्ड पर था। यह अंतरिक्षयान ए-10 श्रेणी के सूक्ष्म-अंतरिक्षयान जांच उपग्रह के रूप में परिभाषित है जिसको बीजिंग की वाणिज्यिक वांतरिक्ष कंपनी 'AZSPACE' ने विकसित किया था। यह उपग्रह बी 300 श्रेणी के बड़े पुनःप्राप्ति योग्य उपग्रह का आदि प्रारूप है।

यू एस स्पेस फोर्स द्वारा इस उपग्रह को करीब 310-मील (500 किलोमीटर) की निकट-ध्रुवीय कक्षा में कैटलोगबद्ध किया गया था।

जुलाई 2019 में आइस्पेस द्वारा किया गया प्रथम ऐतिहासिक प्रमोचन, जिसमें हाइपरबोला-1 चार-चरण रॉकेट ने आइस्पेस को कक्षा में पहुंचने वाला प्रथम चीनी वाणिज्यिक प्रमोचन स्टार्ट-अप बना दिया था। उसके बाद यह पहली बार है जब आइस्पेस ने किसी उपग्रह को कक्षा में स्थापित किया है

इस दौरान आइस्पेस अपने अगले, बड़े एवं अधिक जटिल

प्रमोचन यान-हाइपरबोला-3 को पुनरुपयोगी बनाने के लिए आवश्यक ऊर्ध्वाधर उत्पादन, ऊर्ध्वाधर अवतरण की प्रौद्योगिकियों पर काम कर रही है। कंपनी ने हाल के सप्ताहों में जिउक्वान में दो "हॉप" परीक्षण किए। इन परीक्षणों में 1,125 फीट (343 मीटर) की तुंगता और अवतरण क्षेत्र में 164 फीट (50 मीटर) की दूरी तय करने की नई उपलब्धि प्राप्त हुई।

## स्पेसएक्स ने आइएसएस के लिए तीसरे एक्सिओम अभियान का प्रमोचन किया



आभार: स्पेस एक्स

स्पेसएक्स ने 18 जनवरी को एक्सिओम स्पेस के तीसरे निजी अंतरिक्षयात्री अभियान का प्रमोचन किया, जिसमें नासा के एक अनुभवी पूर्व अंतरिक्षयात्री और यूरोपीय सरकारों के तीन अंतरिक्षयात्रियों को अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन भेजा गया।

18 जनवरी, 2024 को 21:49 यूटीसी पर फ्लोरिडा के कैनेडी स्पेस सेंटर के लॉन्च कॉम्प्लेक्स 39A से फॉल्कन 9 ने उड़ान भरी और क्रू ड्रैगन स्पेसक्राफ्ट फ्रीडम को कक्षा में स्थापित किया। उड़ान भरने के लगभग 12 मिनट बाद फ्रीडम ऊपरी चरण से अलग हो गया।

एक्स-3 अभियान एक्सिओम स्पेस द्वारा आयोजित इस प्रकार का तीसरा अभियान है। एक्सिओम ने अप्रैल 2022 में एक्स-1 और मई 2023 में एक्स-2 को उड़ाया था।

एक्स-3 का नियंत्रण नासा के पूर्व अंतरिक्षयात्री माइकल लोपस-अलिग्रिअ ने किया है जिन्होंने एक्स-1 का भी नियंत्रण किया था। कर्मीदल के अन्य तीन सदस्य यूरोपीय सरकारों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

एक्स-3 के दो अभियान विशेषज्ञ हैं, तुर्की के अल्पर गेजरवेस और स्वीडन के मार्कस वांड। तुर्की वायु सेना में पायलट के रूप में कार्यरत गेजरवेस उस देश से अंतरिक्ष की ओर उड़ान भरनेवाले प्रथम व्यक्ति हैं। वांड, स्वीडन की वायु सेना के पूर्व पायलट हैं और अंतरिक्ष की ओर उड़ान भरनेवाले स्वीडन के द्वितीय व्यक्ति हैं।

## फॉल्कन 9 ने पीएसीई भू विज्ञान अभियान का प्रमोचन किया



आभार: नासा

8 फरवरी को स्पेसएक्स के फॉल्कन 9 ने नासा के भू विज्ञान उपग्रह को कक्षा में स्थापित किया। यह अमरीकी सरकार के लिए 60 से अधिक वर्षों में इस प्रकार का प्रथम प्रमोचन था।

तेज़ हवाओं के कारण हुए दो दिन के विलंब के बाद केप कैनवरल स्पेस फोर्स स्टेशन के स्पेस लॉन्च कॉम्प्लेक्स 40 से 8 फरवरी, 2024 को 06:33:32 यूटीसी पर फॉल्कन 9 ने अपनी उड़ान भरी। इसने नासा के प्लैकटन, एयरोसोल, क्लाउड, ओशियन इकोसिस्टम या पीएसीई अंतरिक्षयान को सूर्य तुल्यकाली कक्षा में स्थापित किया।

पीएसीई में पादपप्लवक जैसी जैविक गतिविधियों के मॉनीटरन के साधन के रूप में महासागर के रंग और वायुमंडलीय मेघ एवं एयरोसॉल, दोनों के अध्ययन के लिए उपकरण ले जाए गए। मेरीलैंड के गोडड्रूड स्पेस फ्लाइट सेंटर में विकसित इस अभियान की कुल लागत \$964 मिलियन थी और इसकी अभिकल्पना तीन साल की अवधि के लिए की गई है, हालांकि वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि यह कम-से-कम एक दशक तक चलेगा।

## एच3 रॉकेट का दूसरा प्रयास सफल

अपने प्रथम प्रमोचन की असफलता के बाद जापान का एच3 रॉकेट, 17 फरवरी, 2024 को लगभग एक साल बाद अपने द्वितीय प्रमोचन में कक्षा में पहुंचा।



आभार: जाक्सा

मौसम के कारण हुई दो दिन की देरी के बाद 17 फरवरी, 2024 को 00:22 यूटीसी पर तानेगाशिमा स्पेस सेंटर से एच3 रॉकेट ने उड़ान भरी। शुरुआत में ढाई घंटे से अधिक समय तक चलने वाली उड़ान में काउन्ट डाउन के दौरान कोई समस्या रिपोर्ट नहीं की गई।

प्रमोचन की एक महत्वपूर्ण बिंदु थी ऊपरी चरण का पृथक्करण और इसके LE-5बी-3 इंजन का प्रज्वलन। मार्च 2023 में किए गए यान के प्रथम प्रमोचन में, LE-5बी-3 इंजन प्रज्वलित होने में असफल हो जाने के कारण, वह चरण और उसके प्रदायभार, ALOS-3 भू प्रेक्षण उपग्रह को नष्ट करने के निर्देश देने के लिए नियंत्रक मजबूर हो गए थे।

जापानी अंतरिक्ष एजेंसी जाक्सा द्वारा एच3 परीक्षण उड़ान 2 (एच3टीएफ2) नामक इस प्रमोचन में इंजन प्रज्वलित हुआ। उत्पादन के साढ़े 16 मिनट के बाद लगभग 674 किलोमीटर की ऊंचाई की प्रथमिक कक्षा पर यह चरण पहुंच गया और कुछ ही क्षणों के बाद इसने अपने प्रदायभारों में से कैनोंन इलेक्ट्रॉनिक्स द्वारा निर्मित सीई-सैट-1ई प्रतिबिंबन उपग्रह को प्रस्तरित कर दिया।

एच3, जापान की भावी अंतरिक्ष योजनाओं के लिए महत्वपूर्ण रॉकेट है। यह एच-2ए का स्थान लेगा और नागरिक तथा सैनिक अभियानों को प्रमोचित करेगा जिसमें नए एचटीवी-एक्स अंतरिक्षयान भी शामिल हैं जो अंतर्राष्ट्रीय स्पेस स्टेशन तक माल पहुंचाएगा। एच3 की अभिकल्पना भी एच-2ए से काफी कम लागत पर प्रचालनीय ढंग से की गई है जो इसे प्रमोचन के वाणिज्यिक बाज़ार में और अधिक सशक्त प्रतियोगी बनाता है।

## स्टारशिप ने तीसरी परीक्षण उड़ान भरी

स्पेसएक्स के स्टारशिप यान ने 14 मार्च को अपनी तीसरी परीक्षण उड़ान भरी। निर्धारित परीक्षण लक्ष्यों में से अधिकांश की सफल पूर्ति करके पहली दो उड़ानों की तुलना में इस उड़ान में इसने काफी प्रगति प्राप्त कर ली है।

स्टारशिप/सुपर हेवी वेहिकल ने कंपनी के स्टारबेस साइट से पूर्वी समय सुबह 9:25 बजे उड़ान भरी। स्पेसएक्स ने काउन्ट डाउन के दौरान किसी तकनीकी समस्या की सूचना नहीं दी।

सुपर हेवी अभिवर्धक ने "हॉट स्टेजिंग" क्रियान्वित करने से पहले लगभग तीन मिनट तक अपने सभी 33 रैचर इंजनों को प्रज्वलित किया, जिनमें पृथक्करण से पहले स्टारशिप के ऊपरी चरण के इंजन सुपर हेवी से जुड़े रहने के दौरान ही प्रज्वलित हो गए।

इसके बाद अभिवर्धक ने मैक्सिको की खाड़ी में स्पेसएक्स वेबकैस्ट होस्टों द्वारा "सॉफ्ट स्प्लैश डाउन" कहे जानेवाले क्रिया की कोशिश करते हुए ज्वलनों का निष्पादन किया। तथापि, अवतरण ज्वलन सही तरीके से नहीं हुआ और कंपनी ने बाद में कहा कि अवतरण ज्वलन के लिए कई रैचर इंजनों को जलाने के बाद अभिवर्धक समुद्र से 462 मीटर ऊपर टुकड़ों में बिखर गया।



आभार: स्पेस एक्स

कई मिनट बाद, यान ने पुनः प्रवेश करना शुरू कर दिया। स्टारशिप के एक फ्लैप पर लगे हुए कैमरे ने पुनः प्रवेश की तस्वीरें प्रदान की, जिनका स्टारलिनक उपग्रहों के माध्यम से रिले किया गया। उड़ान भरने के लगभग साढ़े 49 मिनट बाद दूरमिति नष्ट हो गई जब यान 65 किलोमीटर की ऊंचाई से नीचे उतर रहा था। स्पेसएक्स ने बाद में वेबकास्ट पर कहा कि स्टारलिनक उपग्रह और नासा टीडीआरएसएस डेटा रिले उपग्रह दोनों के माध्यम से प्राप्त संपर्क एक साथ नष्ट हो गया जिससे यह अनुमान लगाया गया कि यान टूट गया होगा।

●●●

आभार: वीएसएससी पुस्तकालय

# ग्लोबल वार्मिंग



अंजली गोयल  
श्री पवन कुमार मंगल,  
वैज्ञानिक/इंजी-एसएफ,  
एमवीआइटी की पत्नी

ग्लोबल वार्मिंग एक आधुनिक अभिशाप,  
मानव जाति के भोग-विलास का है दुष्पाप,  
प्रदूषित वातावरण, चढ़ता पारा शुष्क धरा का,  
उन्नत हो रहा निरंतर,  
दिनोदिन पिघलता ग्लेशियर, बढ़ता है सागर स्तर।

शहरीकरण-औद्योगीकरण का प्रसार,  
हरे-भरे वनों, वृक्षों का विनाश,  
सब होता मानव सभ्यता विकास के नाम पर,  
कहीं अतिवृष्टि, कहीं सूखा तो कहीं चक्रवात,  
धरा की सुंदर छटा पर बरपाएं कहर।

ग्रीन हाउस गैसों के बढ़ते प्रभाव,  
कारण जिसके सर्दी, गर्मी, बारिश,  
मौसमों का बेवक्त बदलाव  
काली अँधियारों से घिरी निशा-नभ पर,  
टूटते बंधन सृजित प्रकृति के नियम अक्सर।

लुप्त हो चली हरित धरती का श्रृंगार,  
कार्बन गैस से पड़ रही प्रदूषण की की दोहरी मार  
सुनामी, तूफान, सूखे का खतरा,  
मर्यादा तोड़ प्रकृति के दोहन का,  
भयंकर परिणाम झेल रहे अब पीढ़ी का हर तबका।

वृक्ष लगाकर, सादा जीवन अपनाकर,  
प्रकृति सृजित नियमों का पालन कर,  
मर्यादित क्रियाकलापों से सुख-समृद्ध  
जीवन की नींव डालकर,  
दूर करें ग्लोबल वार्मिंग आधुनिक अभिशाप को,  
स्वच्छ एवं समृद्ध भारत बोलकर

प्रकृति की छटा बड़ी निराली,  
हरे-भरे वृक्षों से आच्छादित भांति सबको हरयाली  
चाँद-तारों की टिमटिमाहट से जगमगाती रातें,  
सौन्दर्यता से परिपूर्ण धरा हमारी।



# बच्चों में मोबाइल गेम की लत



सहीर एस  
वरि. सहायक (तदर्थ), एसटीएस



बेटा आठवीं कक्षा में पढ़ता है, उसकी छोटी बहन छठी कक्षा में। घर का काम खत्म करने के बाद माँ अपने दोनों बच्चों की पढ़ाई पर ध्यान देती थीं। जब उनके पिता, जो गल्फ में काम करते हैं, घर की बातें जानने के लिए उन्हें प्रति दिन वीडियो कॉल के माध्यम से कॉल करते थे तो बेटा उन्हें बताता था कि उसे मोबाइल फोन चाहिए। इस तरह पिता ने अपने बेटे के लिए एक मोबाइल फोन खरीदा।

पहले तो वह अपनी छोटी बहन के साथ मिलकर मोबाइल देखता था। गेम डाउनलोड करने के बाद, वह बाद में अपनी छोटी बहन से बचकर खुद को छुपाने के लिए कहीं चले जाने लगा और इस प्रकार गेम खेलना शुरू हुआ। टीचर उसकी माँ

को बेटा पढ़ाई में पिछड़ने की बात बताती रही। इस तरह माँ को अपने बेटे का मोबाइल गेम के प्रति जुनून नज़र आने लगा। कई बार समझाने की कोशिश की। स्कूल टीचरों और गल्फ से पापा ने जो भी कहा उसका कोई असर नहीं हुआ। जब बेटा मानसिक रूप से गेम का आदी हो गया तो वे उसे काउंसलिंग के लिए ले गए।

परिवार में शांति लौट आई क्योंकि बेटे ने काउंसलिंग में सहयोग दिया और धीरे-धीरे गेम और फोन से दूर हो गया। कुछ महीने बाद, उसने अपनी माँ की जानकारी के बिना फोन पर फिर से गेम डाउनलोड किया। बातें पहले से भी बदतर होने लगीं। बिना भोजन पानी आदि के वह खेलता रहा। वह मानसिक रूप

से बहुत खोया-खोया रहता, क्योंकि उसने अपनी छोटी बहन, माँ और दोस्तों से किसी संपर्क के बिना अपना कमरा बंद करके खुद को खेल तक ही सीमित रखा।

उसने अपनी माँ की बात नहीं मानी, जो कई बार गल्फ में अपने पति से अपने बेटे की मोबाइल की लत के बारे में शिकायत करती थी। एक दिन उसकी असहिष्णु माँ ने उसका मोबाइल फोन लिया और उसमें से गेम और संपर्क नंबर डिलीट कर दिए। उस दिन उन्होंने पुत्र का ऐसा एक रूप देखा जो उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था। उसने अपनी माँ और छोटी बहन को धक्का दिया और चिल्लाते हुए घर का सामान फेंक कर नष्ट कर दिया। अपने भाई की मानसिक स्थिति को देखकर छोटी बहन डर गई और रोने लगी और छिप गई। वह रसोई में गया, मिट्टी का तेल लाया, पूरे घर में डाल दिया और चिल्लाने लगा कि वह आग लगाने जा रहा है। जब वह माचिस की तलाश कर रहा था, तो उसकी माँ ने कुछ और नहीं सोचा और तुरंत निकटतम पुलिस स्टेशन में फोन किया।

फोन के दूसरी ओर वरिष्ठ नागरिक पुलिस अधिकारी को अम्मा की करुण आवाज़ से घटना की गंभीर प्रकृति का एहसास हुआ और तुरंत स्टेशन ड्यूटी पर तैनात वरिष्ठ सिविल पुलिस अधिकारी एवं होम गार्ड को घटना स्थल पर भेजा।

जब वे घटना स्थल पर पहुंचे तो देखा कि पूरे घर में मिट्टी का तेल डालकर, सारा सामान इधर-उधर फेंककर तोड़ दिया गया है। बाथरूम में घुसे लड़के से पुलिस अधिकारी शांति से बात करते हुए दरवाज़ा खटखटाते रहे। पास आने पर आग लगाउंगा... दूर चले जाओ... इस तरह की उसकी धमकी का बहुत हल्के ढंग से जवाब देते हुए पुलिस अधिकारियों ने बड़ी शांति से उससे वादा किया कि वे मोबाइल वापस कर देंगे और साइबर सेल के माध्यम से डिलीट हुए पूरे गेम को तुरंत बरामद कर लेंगे। इतने में वह दरवाज़ा खोलकर बाहर आया।

फिर उसे बहुत सावधानी से शांत कराया गया। इसी बीच उन्हें एहसास हुआ कि उसकी मानसिक स्थिति बहुत खराब हो रही है और आज डॉक्टर को दिखाने के बाद कल साइबर सेल ले जाया जा सकता है। बहुत प्यार से कहा तो वह तैयार हो गया। उसे तुरंत मेडिकल कॉलेज के मानसिक स्वास्थ्य वार्ड में ले जाया गया। मेडिकल कॉलेज में उसका इलाज और काउंसलिंग चल रहा है। अब वह काफी बदल गया है। उसकी माँ और छोटी बहन को राहत मिली है।

एक बहुत ही खतरनाक पल में यथा समय अपना कर्तव्य निभाने के लिए वरिष्ठ नागरिक पुलिस अधिकारी और होम गार्ड को सिटी पुलिस की ओर से बधाई।

### माता-पिता के लिए:

- बच्चों के लिए मोबाइल फोन का उपयोग करने का समय और स्थान सीमित करें।
- समझें कि बच्चे मोबाइल फोन पर क्या और क्यों देख रहे हैं।
- उन्हें धीरे-धीरे ऑन-लाइन गेम के दुरुपयोग समझाएं।
- अपने बच्चों के साथ मनोरंजन के लिए कुछ समय निकालें।
- उन्हें कला और खेल से जुड़ी गतिविधियां प्रदान करके मोबाइल से दूर करने का प्रयास करें।
- बच्चों पर दोषारोपण किए बिना उनके साथ गैर-निर्णयात्मक तरीके से व्यवहार करें।
- माता-पिता को भी यह जानने की ज़रूरत है कि उनके बच्चे कौन-सा गेम खेल रहे हैं।
- बच्चों के साथियों और उनके रिश्तों के बारे में जानें।
- अपने बच्चों को मोबाइल की लत की गंभीरता के बारे में बताने का प्रयास करें।
- यदि आपको लगे कि आपके बच्चे मोबाइल फोन के आदी हैं तो तुरंत उनकी काउंसलिंग कराएं। यदि आप बहुत उदास स्थिति में हैं तो मानसिक स्वास्थ्य पेशेवर से परामर्श करने में संकोच न करें।

स्रोत: केरला पुलिस फाइलों से प्राप्त वास्तविक घटना (इंटरनेट)





**बी. वेदांश**

श्री बी. वेंकटशिवराम जादव,  
वैज्ञा/इंजी-एसएफ, एयरो के पुत्र

## मेरा प्यारा मिट्टू भाई

मिट्टू भाई, मिट्टू भाई  
क्या तुमने लड्डू खाई?  
दादी ने प्यार से बनाई  
दादू ने दूर से भिजवाई  
क्या तुमने लड्डू खाई?  
मिट्टू भाई, मिट्टू भाई।

मिट्टू भाई, मिट्टू भाई  
क्या तुमने हलवा खाई?  
मम्मा ने तुम्हारे लिए बनाई  
पापा ने प्यार से खिलाई,  
क्या तुमने हलवा खाई?  
मिट्टू भाई, मिट्टू भाई।।

मिट्टू भाई, मिट्टू भाई  
मेरे प्यारे, मिट्टू भाई,  
टीचर ने हमें मैदान में बुलाई,  
अच्छे से खेल-खूद करवाई,  
क्या तुम थक गए, छोट्टू भाई?  
मेरे प्यारे मिट्टू भाई,  
अब कौन-सा मिठाई खाओगे?  
मिट्टू भाई, मिट्टू भाई।।



**लक्ष्मी उष्णिकृष्णन**  
वैज्ञा/इंजी-एसडी, पसीएम

## सांवरिया

हमारी रूह में  
आपकी यादों की बरसात है,  
मगर, हमें क्यों ऐसा लगता है कि  
आप बरसात से ही खफ़ा हैं..  
सागर-सा गहरा है सनम  
हमारा प्यार आपसे,  
मगर, हमें क्यों ऐसा लगता है कि  
आप सागर से ही नाराज़ हैं...  
सांस है ज़रूरी जीने के लिए  
और आप हैं हमारे लिए,  
मगर, हमें क्यों ऐसा लगता है कि  
आप खुद से ही रूठे हुए हैं...

# क्या आप जानते है ?....

## हाइलाइटर पेन के इतिहास

### के बारे में



**पवन कुमार मंगल**  
वैज्ञा/इंजी-एसएफ, एमवीआइटी

वर्तमान में पुस्तकों, किताबों, नोट्स, लेखों, फोटो इत्यादि पर महत्वपूर्ण वृतांत, शब्दों एवं प्रसंगों को याद करने एवं दोहराने के लिए हाइलाइट किया जाता है। पाठक, विद्वान, विद्यार्थी या कहे हर व्यक्ति किताबों व लेखों के मुख्य शब्दों को हाइलाइट करने के लिए विभिन्न रंगों एवं आकारों के हाइलाइटर पेन का इस्तेमाल करता है।

लगभग 60 वर्षों से लगातार पुस्तकों, लेखों एवं चित्रों को विभिन्न रंगों में हाइलाइट अंकित करने वाले पेनों एवं इसकी स्याही की उत्पत्ति सन् 1963 में कार्टन इंक कंपनी के पूर्व उपाध्यक्ष (प्रौद्योगिकी) फ्रांसिस जे हॉन द्वारा संयोगवश बच्चों के लिए अस्थायी मार्कर बनाते वक्त हुई। रसायनों एवं रंगों पर प्रयोग करते हुए हॉन ने देखा कि पानी पर आधारित फ्लोरोसेंट पीली स्याही का उपयोग पेपर पर हाइलाइट करने पर न तो इस पर लिखे शब्दों या चित्रों को और ना ही पेपर को कोई नुकसान पहुंचता है। इसका नामकरण उन्होंने हाइ-लाइटर (Hi-liter) किया।

सन् 1970 के दशक से ही विभिन्न लेखों, शब्दों एवं महत्वपूर्ण अनुसूची को चिन्हित करने के लिए साधारण पेन की जगह हाइलाइटर का उपयोग बढ़ा। ज़्यादातर हाइलाइटर पेन या कहे 85 प्रतिशत हाइलाइटर पेन पीले (नियोन) या गुलाबी रंग के

उपयोग किए जाते हैं क्योंकि इस रंग से हाइलाइट करने पर फोटोकॉपी/छायाचित्र लेने पर इसकी छाया का प्रभाव नहीं होता है। आज ये अन्य रंगों जैसे नारंगी, हरा, नीला, लाल इत्यादी में भी बाज़ार में उपलब्ध है। हाइलाइटर के आगे की नोक की आकृति भी विभिन्न आकारों जैसे गोल, छेनी इत्यादि में उपलब्ध है। पाउडर, क्रीम एवं द्रवीय स्याही के आधार पर मुख्यतया तीन तरह के हाइलाइटर बाज़ार में उपलब्ध हैं।

आधुनिक डिजिटल दुनिया में विभिन्न कंपनियों द्वारा प्रस्तुत ई-पुस्तक एवं डिजिटल प्रलेखन पठन सामग्री अनुप्रयोग सॉफ्टवेयर पर शब्दों को जीवंत दिखाने हेतु विभिन्न रंगों एवं प्रारूप के हाइलाइटर की ई-सुविधा प्रदान की गई है। उदारहण के तौर पर एडोबी रीडर एवं माइक्रोसॉफ्ट कंपनी इत्यादि द्वारा उपयोगकर्ता को डिजिटल प्रलेख पठन में मुख्य बिंदुओं को हाइलाइट करने का विकल्प प्रदान किया गया है।

अतः हाइलाइटर पेन पठन सामग्री के महत्वपूर्ण बिंदुओं को, बिना पठन पेपर को नुकसान पहुंचाए, दोहराने में पाठकों एवं विद्यार्थियों के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।



संदर्भ सूची : “Brighting the school year: The history of the highlighter” by Danielle Legare

# क्या आप जानते हैं ?



**संकल्प विज्जोई**  
वैज्ञा/इंजी-एससी, ईएसआई

2015 में क्यूरियोसिटी मार्स रोवर के सूर्यास्त की पहली रंगीन तस्वीर में सामने आया कि मंगल पर सूर्यास्त नीला होता है। नासा के अनुसार ऐसा इसलिए होता है क्योंकि मंगल ग्रह के वायुमंडल के धूल में महीन कण होते हैं जो नीले रोशनी को पीले, नारंगी और लाल जैसे लंबी-तरंग दैर्ध्य रंगों की तुलना में अधिक कुशलता से वातावरण में प्रवेश करने की अनुमति देते हैं।



यदि एक ही धातु के दो टुकड़े अंतरिक्ष में स्पर्श करें, तो वे एक साथ चिपक जाएंगे। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि अंतरिक्ष में कोई वायुमंडलीय ऑक्सीजन नहीं है और परिणामस्वरूप कोई अवरोध नहीं है, इसलिए दो धातुएं एक बंधन बनाती हैं और एक हो जाती हैं। इसे कोल्ड वेल्डिंग के नाम से जाना जाता है। अंतरिक्ष यान निर्माण और अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर काम करने के संदर्भ में यह पूरी तरह से एक दुःस्वप्न जैसा लग सकता है, लेकिन चूंकि धातुएं और उपकरण पृथ्वी से आई होंगी, इसलिए वे लेपित परत को बनाए रखेंगे और एक साथ फंसेंगे नहीं।

# नया



**स्नेहा वर्मा**  
श्री विजेन्द्र कुमार, वैज्ञा/इंजी-एसएफ,  
पीसीएम की पत्नी

नए गीत की हर नई पंक्ति ऐसी हो, नई चेतना देकर नए भाव भर दें  
नया होवे चिंतन मनन भी नया हो, नया राग देकर नवनीत स्वर दें  
नए आसमां में नए ही विहंग हों, नई-नई हो उड़ानें, नए उनको पर दें  
नई कार्य शैली, तमन्ना नई हो, नई-नई विधियों से नए काज कर दें  
नए-नए दीपों से नई रोशनी हो, नया हो चमत्कार सारे तम को हर दें  
नया ही पथिक हो, नई चाल चलकर नया पथ दर्शक, नई-सी डगर दें  
नए-नए तन में नई शक्ति संचित कर, नया जोश भरकर नई सी उमर दें  
नई कामना को, नई भावना से, वरद हस्त कर के, नया-सा स्वर दें





भावनेश पंचाल "भूधर"  
वैज्ञा/इंजी-एसडी, सीजीएसई

# पतंग

उड़ती रहेगी सदा खुले गगन में  
बढ़ती जाती प्रकाश की ओर  
छूने को नित नई ऊंचाईयां  
डर नहीं उसे ऊचाँइयों का  
अपितु है भरोसा स्वयं पर  
मंज़िल तक पहुँचने का।  
वाकिफ़ है राह के संकटों से  
सहने होंगे धपड़े पवन के  
तत्पर प्रतिस्पर्धी काटने को डोर  
फिर भी ठहरी न रहेगी  
अपनी तिरछी चाल से  
तोड़ती चक्रव्यूह विरोधियों के  
बढ़ती जाती मंज़िल की ओर  
सहती रहेगी झोंको को  
जब तक शांत न हो जाए झोंके हवा के  
फिर बढ़ चलेगी रुख देख हवा का  
खुद को मोड़ देगी इस तरह  
की प्रतिकूल भी बन जाए अनुकूल  
यही काबिलियत है पतंग की  
करती प्रेरित पंचाल को।  
उड़ते तो कागज़ के टुकड़े भी हैं  
हवा के साथ-साथ  
क्षण पश्चात् नहीं रहता अस्तित्व उनका  
लेकिन यह पतंग है  
हैं हुनर इसमें हवा को चीरने की  
बढ़ती रहेगी, उड़ती रहेगी सदा ।

मुख्यतया: राजस्थान और  
गुजरात में उत्तरायण (14  
जनवरी) पर पतंग उड़ाए  
जाते हैं। गुजरात में  
अंतर्राष्ट्रीय पतंग महोत्सव  
भी मनाया जाता है। पतंग से  
प्रेरित होकर मैंने ये कविता  
लिखी है।

# सबसे कुशल कर्मयोगी की खोज



संकल्प विज्ञोई  
वैज्ञा/इंजी-एससी, ईएसएई



बहुत समय पहले की बात है, एक छोटे से गाँव में एक युवक रहता था। उसका नाम विक्रम था। विक्रम एक बहुत बड़े सेठ का बेटा था। गाँव के सारे व्यापारी उनके ही रेख-देख में कार्य करते थे। विक्रम के पिता ने विक्रम को, कर वसूलने का कार्य दिया हुआ था। उसी गाँव में एक कबीर नामक युवक भी रहता था। वह दोनों सभी गाँव वालों के बीच में प्रसिद्ध थे। विक्रम अपने गुरु और संपत्ति को लेकर तथा कबीर अपनी सेवा और प्रेम भाव को लेकर।

एक दिन, गाँव में एक बड़ा समाचार आया कि गाँव के पास एक प्रसिद्ध राजा आनेवाले हैं और वह अपने दरबार में सबसे कुशल कर्मयोगी को बड़ा इनाम देंगे। यह सुनकर सभी गाँव वाले सबसे कुशल कर्मयोगी कौन हैं, यह चयन करने में लग गए। कबीर भी उस गुज़ारिश में शामिल हुआ, क्योंकि वह अपने

कार्यों में सतत था और सभी के साथ अच्छा व्यवहार करता था। विक्रम, जो हमेशा दुर्व्यवहार और कठोर रहता था, ने भी अपने मित्र के साथ चयन प्रतिक्रिया में भाग लेने का निर्णय लिया। उसने सोचा कि अगर वह इतना बड़ा इनाम जीतता है, तो उससे अधिक शक्तिशाली कोई नहीं होगा।

विक्रम ने सभी मध्यम वर्ग के लोगों को पैसों का लालच देकर राजा के सामने उसकी बड़ाई करने को कहा। उसने निचले और गरीब वर्ग के लोगों का तिरस्कार करते हुए उनसे कहा कि अगर वह लोग राजा के सामने उसकी अच्छाईयों पर टिप्पणी करेंगे तो वहाँ उनको एक वक्त की रोटी मुफ्त में देगा। विक्रम ने कहा कि जो व्यक्ति उसके पक्ष में राजा के सामने वार्तालाप नहीं करेगा वह उन पर अत्यधिक कर लगाएगा तथा उनको गाँव में रहने नहीं देगा।

एक माह बाद गाँव में आखिकार वह अवसर आया। राजा ने सभी को अपने दरबार में आमंत्रित किया। सभी लोगों ने अपने कर्मयोगियों को सबसे अच्छे तरीके से तैयार किया, और सब ने उम्मीद की कि वे इस इनाम के हकदार होंगे। राजा का दरबार लगा और सभी कर्मयोगियों के कार्यों का प्रस्तुतीकरण हुआ। सभी गांव वालों ने बारी-बारी से प्रतियोगियों के पक्ष में राजा के समक्ष बातें रखी। ज्यादातर लोगों ने राजा के सामने, विक्रम के समर्थन में कहा कि वह सबसे अधिक कर्मयोगी व्यक्ति है इसलिए पुरस्कार उसी को मिलना चाहिए। राजा तथा उनके मंत्रियों ने सभी के प्रस्ताव का गहराई से विश्लेषण किया। अत्यधिक चिंतन के पश्चात् राजा ने कहा कि यह पुरस्कार मैं कबीर को देना चाहता हूँ।

सभी के द्वारा राजा के इस निर्णय का कारण पूछने पर राजा ने बताया कि जब वह इस गांव में आ रहे थे, तो उन्होंने इस प्रतियोगिता की निष्पक्षता की जांच के लिए अपना वेश बदलकर एक भिखारी का रूप धारण किया था। कई लोगों ने भिखारी समझ उनका अपमान किया तथा कुछ लोगों ने उन पर तरस खाकर उन्हें कुछ खाने को दिया। अपने इस प्रयोग के बीच उनकी मुलाकात विक्रम से भी हुई जिसने उनका बहुत ही निर्दयता पूर्वक तिरस्कार किया तथा उन पर कठोर टिप्पणियां

की, परंतु कबीर ने उनसे विनम्रता पूर्वक बात की तथा उनकी सेवा की। कबीर की इस निश्चल तथा निस्वार्थ सेवा को देख वह अत्यधिक प्रसन्न हुए।

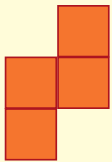
राजा ने कबीर से कहा, " तुम्हारी इस सेवा भावना और नम्रता ने मेरे दिल को छू लिया है। तुम इस इनाम के लायक हो! तुम भीख मांगने वाले लोगों की सेवा करते हो और गांव में हर किसी के साथ उत्कृष्ट व्यवहार करते हो। तुम इंसान को इंसान की तरह देखते हो इसीलिए तुम ही एक सच्चे कर्मयोगी हो।

इस प्रकार, कबीर ने गाँव को गर्वित किया और उसने समझाया कि कर्मयोगी हमेशा नम्र और सेवाशील रहता है। उसको इनाम ही नहीं बल्कि सभी गांव वालों के सम्मान को जीतने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। विक्रम को अपनी कूटनीतियों की वजह से एक लाख का जुर्माना तथा सभी से माफी मांगने का दंड मिला तथा उसे प्रतियोगिता से भी निरस्त कर दिया गया। इसके परिणामस्वरूप, गाँववाले एक नई सोच और समृद्धि के साथ आगे बढ़े।

इस कहानी से हमें यह सीखने को मिलता है कि कर्मयोगी हमेशा सेवा और नम्रता का मार्ग चुनता है और उसकी मेहनत और सतत प्रयासों से ही वह सफलता की ऊँचाइयों को छू सकता है।



## ज़िंदगी का टेद्रिस खेल



टुकड़े गिरते, कभी सुख, कभी गम का तूफान,  
टेद्रिस की तरह ये ज़िंदगी, हर पल एक खेल समान ।

ऊंचे होते लेवल, बढ़ती रफ्तार, ज़रूरी है लचीलापन,  
नहीं पता अगला क्या आएगा, बस धैर्य रखना ही सही कदम।

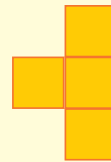


अपनी सोच से मोड़ो टुकड़ों को, बनाओ इमारत ख्वाबों की,  
चतुराई से, धीरे-धीरे, टेद्रिस की पूरी लाइन खींचो।

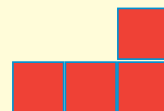
हर बार पुराने को मिटाओ, खुद को बेहतर बनाओ  
मंजिल तो बस एक बिंदु है, सफर ही असली है ।



तो खेलो इस खेल को खुले मन से, हर टुकड़े में छिपा है कुछ नया,  
जीवन की टेद्रिस जीतो तुम, बस हार मत मानो कभी।



**अनूप राज आर**  
वैज्ञा/इंजी-एसएफ, एसआरएस



# वेस्ट इंडीज़: क्रिस्टोफर कोलंबस से क्रिकेट तक



राजेश एन  
वैज्ञा/इंजी-एसई, एएसओई



क्रिकेट भारत का सबसे लोकप्रिय खेल है। इसकी लोकप्रियता 1980 के दशक में बढ़ी थी जब हमने वर्ष 1983 का एक-दिवसीय क्रिकेट विश्व कप जीता था। लोकप्रियता में वृद्धि सिर्फ ट्रॉफी जीतने के कारण नहीं हुई थी, बल्कि इस कारण से भी थी कि हमने फाइनल में "क्रिकेट के शहंशाह" वेस्ट इंडीज को हरा दिया था। उस ज़माने के दौरान "क्रिकेट के शहंशाह" मुहावरा वेस्ट इंडीज क्रिकेट टीम के लिए सबसे उपयुक्त था। अन्य टीमों ने उन्हें हराने के बारे में कभी सपने में भी नहीं सोचा करते थे।

ज़रा वेस्ट इंडीज क्रिकेट के महान नामों पर एक नजर डालें। गारफील्ड सोबर्स, क्लाइव लॉयड, गॉर्डन ग्रीनिज, विवियन रिचर्ड्स, डेसमंड हेंस, एल्विन कालीचरण, रोहन कन्हई, ब्रायन लारा, शिवनारायण चंद्रपॉल, रामनरेश सरवान और क्रिस गेल जैसे महान बल्लेबाज। मैल्कम मार्शल, माइकल होल्डिंग, एंडी रॉबर्ट्स, जोएल गार्नर, कॉलिन क्रॉफ्ट, कोटनी वॉल्श और कर्टली एम्ब्रोस जैसे खेल के इतिहास के सबसे घातक तेज गेंदबाज इस टीम में शामिल थे।



लारा और रिचर्ड्स

लारा, चंद्रपॉल, एम्ब्रोस और गेल को छोड़कर, अन्य ने वेस्ट इंडीज क्रिकेट की स्वर्णिम पीढ़ी का प्रतिनिधित्व किया जिसने पहले दो एक-दिवसीय विश्व कप जीते थे। "तेंदुलकर और लारा में सर्वश्रेष्ठ कौन है?" यह सवाल अभी भी लाजवाब है। हालाँकि लारा, चंद्रपॉल, एम्ब्रोस और गेल के युग से, एक टीम के रूप में वेस्ट इंडीज का प्रदर्शन गिरना शुरू हो गया और एक समय ऐसा आ गया कि उन्हें कोई भी टीम हरा सकती थी। सबसे हालिया घटनाक्रम यह है कि वे वर्ष 2023 में भारत में आयोजित किए गए आईसीसी विश्व कप के लिए योग्यता प्राप्त करने में असफल रहे।

जब हम उन्हें "वेस्ट इंडियन" कहते हैं, तो यह देखकर अच्छा लगता है कि उस नाम में "इंडिया" है। इसका नाम भारत से क्यों जुड़ा है? कहाँ है यह देश?... दुनिया के नक्शे में या संप्रभु देशों की सूची में खोजेंगे तो इस नाम का एक देश आप नहीं देख पाएंगे।

वेस्ट इंडीज, उत्तरी अटलांटिक महासागर में कैरेबियन सागर का एक क्षेत्र है जो अमेरिका का फ्लोरिडा प्रायद्वीप, मेक्सिको, मध्य अमेरिका, कोलंबिया, वेनेजुएला और गयाना से घिरा है। इसमें एंटिल्स और ल्यूसियन द्वीपसमूह के द्वीप शामिल हैं। लेकिन वेस्ट इंडीज नाम का कोई राजनीतिक आधार नहीं है। यह नाम केवल क्रिकेट में ही प्रयोग किया जाता है।

आइए देखें कि इस भूमि की खोज कैसे हुई, इसका नाम भारत से क्यों जुड़ा है, और वहाँ क्रिकेट कैसे आया?

हम सभी ने स्कूली पढ़ाई के दौरान रेशम मार्ग (Silk Route) के बारे में पढ़ा होगा। चौदहवीं शताब्दी के दौरान, चीन और इंडीज़ (आधुनिक भारत से कहीं बड़ा क्षेत्र, जिसमें भारतीय प्रायद्वीप और दक्षिण पूर्व एशिया शामिल थे। यह नाम यूरोपीय यात्रियों द्वारा रखा गया था।) पूरी दुनिया के सबसे समृद्ध क्षेत्र थे। वे रेशम, मसाले और अफ्रीम जैसी मूल्यवान वस्तुओं के



रॉबर्ट्स, होल्डिंग, क्रॉफ्ट और गार्नर

स्रोत थे। यूरोपीय लोगों को यह जानकारी इतालवी खोजकर्ता मार्कोपोलो (Marco Polo) की यात्राओं से मिली।

एशिया पर मंगोल साम्राज्य के आधिपत्य के तहत, यूरोपीय लोगों ने लंबे समय तक पूर्व की ओर एक सुरक्षित स्थलीय मार्ग (रेशम मार्ग) का आनंद लिया था। यह मार्ग वर्तमान इस्तांबुल (दुनिया का एकमात्र अंतरमहाद्वीपीय शहर जो यूरोप और एशिया के बीच विभाजित है) से होकर जाता था। लेकिन जब वर्ष 1453 में ओटोमन तुर्कों ने रोमनों को हराया और कांस्टेंटिनोपल (इस्तांबुल का प्राचीन नाम) पर कब्ज़ा कर लिया, तो रेशम मार्ग से यात्रा अवरुद्ध हो गई। पंद्रहवीं शताब्दी में, तत्कालीन सबसे उन्नत समुद्री शक्तियों, स्पेन और पुर्तगाल ने इंडीज़ पहुंचने के लिए एक समुद्री मार्ग खोजने की कोशिश शुरू की। इस खोज को शुरू करने की प्रेरणा यूरोपीय पुनर्जागरण (Renaissance) से मिली।

पुर्तगाल और स्पेन के पास इंडीज़ तक पहुँचने के लिए अलग-अलग विकल्प थे। एक विकल्प अफ्रीकी महाद्वीप के चारों ओर नौकायन करना था और दूसरा विकल्प पश्चिम की ओर नौकायन करना था। पुर्तगाल के राजा की रुचि पहले विकल्प में थी और उन्होंने यह काम नाविक बार्टोलोमेयो डियास (Bartolomeu Dias) को सौंपा। डियास का अभियान अफ्रीका के पश्चिमी तट से होकर दक्षिण की ओर खाना हुआ और दक्षिण अफ्रीका के केप ऑफ गुड होप (Cape of Good Hope) तक पहुँचा। लेकिन उन्हें 16 महीने की लंबी यात्रा के बाद वापस लौटने के लिए मजबूर होना पड़ा जब प्रतिकूल मौसम के कारण उनके दल ने आगे जाने से इनकार कर दिया। अपने दूसरे अभियान में, डियास के साथ वास्को डी गामा (Vasco da Gama) भी थे, जो अंततः 20 मई 1498 को केरल के तट पर उतरे।

उसी अवधि के दौरान, स्पेन के प्रसिद्ध नाविक क्रिस्टोफर कोलंबस (Christopher Columbus) अटलांटिक महासागर

## प्राचीन रेशम मार्ग



को पार करके पश्चिम की ओर नौकायन करके इंडीज़ तक पहुंचने के अपने विचार पर अड़े हुए थे। हालाँकि इस विचार को शुरू में स्पेन के राजा ने अस्वीकार कर दिया था, लेकिन बाद में इसे मंजूरी दे दी गई।

वर्ष 1492 में, कोलंबस बहामास द्वीप पर उतरा, जिसे उन्होंने इंडीज़ माना था। इसके बाद यूरोपीय लोगों ने इस क्षेत्र को वास्तविक इंडीज़ और ईस्ट इंडीज़ (वर्तमान इंडोनेशिया) से अलग करने के लिए वेस्ट इंडीज़ कहना शुरू कर दिया।

आज, कोलंबस से जुड़े कई स्मारक आपको देखने को मिलेंगे। संयुक्त राज्य अमेरिका की महिला पहचान (Female personification) कोलंबिया है। कनाडा का राज्य ब्रिटिश कोलंबिया, वाशिंगटन-डी.सी. का डी.सी. वाला कोलंबिया जिला, संयुक्त राज्य अमेरिका में कोलंबिया शहर, कोलंबिया पिक्चर्स कंपनी, कोलंबिया अंतरिक्ष शटल, कोलंबिया विश्वविद्यालय, दक्षिण अमेरिकी देश कोलंबिया आदि कुछ उदाहरण हैं।

कोलंबस द्वारा द्वीपों की खोज के बाद, इस क्षेत्र को कई यूरोपीय शक्तियों (शुरुआत में स्पेन, बाद में पुर्तगाल, इंग्लैंड, नीदरलैंड, फ्रांस और डेनमार्क) द्वारा उपनिवेशित किया गया। इस प्रकार कैरेबियन सागर यूरोपीय आधारित समुद्री व्यापार और परिवहन का एक व्यस्त क्षेत्र बन गया। यूरोपीय लोगों के आगमन के समय, इन द्वीपों पर स्वदेशी अमेरिकी जनजातीय लोगों का कब्जा था, जिन्हें या तो मार दिया गया या उन्हें यूरोपीय लोगों के सामने आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर किया गया था। उन्नीसवीं सदी के दौरान गन्ने के खेतों और व्यापारिक प्रतिष्ठानों में नौकरियों के लिए हजारों भारतीयों और अफ्रीकियों को यहां लाया गया था। इस प्रकार, इस क्षेत्र का जनसमूह अंततः अमेरिकी, अफ्रीकी और भारतीय सभ्य लोगों का मिश्रण बन गई।

वेस्ट इंडीज़ महासंघ (West Indies Federation) एक

अल्पकालिक महासंघ था जो वर्ष 1958 से 1962 तक अस्तित्व में था। वर्ष 1962 में इसके विघटन के साथ, कई स्वतंत्र देश बने जिनमें डोमिनिका, जमैका, बारबाडोस, गुयाना, सूरीनाम, त्रिनिदाद और टोबैगो, सेंट लूसिया, सेंट किट्स और नेविस, सेंट वीसेंट, ग्रेनेडा, एंटीगुआ और बारबुडा आदि शामिल थे। एंगुइला, केमैन द्वीप, मोंटसेराट, तुर्क और कैकोस द्वीप, बरमूडा आदि अभी भी ब्रिटिश उपनिवेश हैं। फ्रेंच गुयाना, गौडेलोप, मार्टीनिक, सेंट मार्टिन, सेंट बर्थेलेमी आदि फ्रांसीसी शासन के अधीन हैं। अरूबा, बोनेयर, सेंट मार्टेन आदि डच शासन के अधीन हैं और पोर्टो-रिको संयुक्त राज्य अमेरिका का हिस्सा है।

यहां क्रिकेट की शुरुआत अंग्रेजों ने की थी। बीसवीं सदी की शुरुआत में प्रत्येक देश और उपनिवेश में अलग-अलग टीमें थीं (यह अब भी है)। एकीकृत वेस्ट इंडीज क्रिकेट टीम का इतिहास 1890 के दशक में शुरू हुआ। वर्ष 1928 में इसे टेस्ट क्रिकेट खेलने का दर्जा प्राप्त हुआ। इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका के बाद टेस्ट क्रिकेट का दर्जा हासिल करने वाली यह चौथी टीम थी।

टीम की शासी निकाय को क्रिकेट वेस्टइंडीज कहा जाता है। इसमें बारबाडोस, गुयाना, जमैका, लीवार्ड द्वीप समूह, त्रिनिदाद और टोबैगो और विंडवार्ड द्वीप समूह के छह क्रिकेट संघ शामिल हैं। 1970 और 80 के दशक में, उन्हें "क्रिकेट का शहंशाह" माना जाता था। उन्होंने पहले दो एक-दिवसीय क्रिकेट विश्व कप जीते थे और टेस्ट क्रिकेट में वह सबसे मजबूत टीम थी।

इक्कीसवीं सदी में भले ही उन्होंने दो 20-20 विश्व कप जीते हैं, फिर भी एक-दिवसीय और टेस्ट क्रिकेट में उनका प्रदर्शन सबसे खराब स्तर पर होता चला आ रहा है। टेस्ट क्रिकेट में सर्वोच्च व्यक्तिगत स्कोर (नाबाद 400 रन) बनाने वाला ब्रायन लारा, टेस्ट क्रिकेट का सबसे किफायती तेज गेंदबाजी आक्रमण, गॉर्डन ग्रीनिज के स्टाइलिश पुल शॉट, निडर होकर बिना हेलमेट पहने ही प्रतिद्वंद्वी तेज गेंदबाजों के खिलाफ जबरदस्त सिक्सर लगाने वाला विवियन रिचर्ड्स ....कितनी प्रतिभाशाली थी यह टीम!!!। एक ज़माने में तो यह टीम फुटबॉल में ब्राज़ील के समान थी। मैं वास्तव में नहीं जानता कि उनके खराब प्रदर्शन का कारण क्या है। लेकिन, मुझे विश्वास है कि वे मजबूती से वापसी करेंगे।





संकल्प विष्णोई  
वैज्ञा/इंजी-एससी, ईएसएई

# सुकून: माता-पिता

जहां थक कर शाम की सारी खामोशी टूट जाया करती है।  
बेचैनियां इतनी हैं कि, हर पल सताया करती है।  
वो उम्मीदों की रोशनी का सूरज जब ढलने लगता है।  
हर्फ-बा-हर्फ ज़िंदगी का हर पन्ना जब भरने लगता है।  
अपना वजूद जब कुछ बेमानी-सा लगता है।  
तब लिपट तुझे रोने को जी करता है।  
एक तेरी यादों में डूब जाया करता हूँ।  
तू ही तो है जिसे मैं, अपने दिन भर के सारे किस्से सुनाया करता हूँ।  
ख्वाहिशों का बोझ जब झंझोरने लगता है।  
तेरी कहानी को खुद से सांझा करता हूँ।  
और जो कभी सोचूँ कि, अब खत्म करते हैं ये किस्सा ज़िंदगी का।  
वो पहली बार तेरा हाथ पकड़, चलने-सीखने की खुशी में खो जाया करता हूँ।  
किसी को हो न हो, तुम्हें मुझपे खुद से ज़्यादा भरोसा है।  
लड़खड़ाये हैं जब भी ये कदम,  
तुमने हर बार डगमगाती मेरी साइकिल की तरह मुझे संभाला है।  
वो कहते हैं, मैं गुरु हूँ उनका मुझसे ही तो घर में उजाला है।  
मेरी ज़िंदगी को तुमने ही तो सवारा है।  
अक्सर जब खुद से ही हार जाया करता हूँ,  
साथ है वो जो तुम्हारे मेरी, उस तस्वीर को देख फिर मुस्कुराया करता हूँ।  
मेरी जायज़ हो या नाजायज़, तुमने हर ज़िद्द पूरी की है।  
जो तुझे न मिल सका, उसकी कमी मुझे न होने दी है।  
मेरी हर कोशिश को तुमने सराहा है।  
हर सांस के साथ एक बात आती है,  
वो बात जिसमें बस तुम्हारी याद आती है।



**अंजली गोयल**  
श्री पवन कुमार मंगल,  
वैज्ञा/इंजी-एसएफ, एमवीआइटी की पत्नी

## सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि

सत्यनिष्ठा की संस्कृति राष्ट्रीय समृद्धि के लिए अतिआवश्यक है। नैतिक आचरण, पारदर्शिता, जवाबदेही और पारस्परिक सम्मान के मूल्यों को अपनाकर, राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जा सकती है। सत्यनिष्ठा की संस्कृति देश के प्रशासन में विश्वास पैदा करने एवं आर्थिक अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ कर विकास के पथ की ओर अग्रसर करने को प्रोत्साहित करती है। वर्तमान में दुनिया के अनिश्चतता के दौर में किसी भी देश की सफलता का राज उस देश की सत्यनिष्ठा के प्रति जबाबदेही एवं पारदर्शिता से जुड़ा है। जैसे-जैसे हम एक जटिल और परस्पर जुड़ी दुनिया में आगे बढ़ रहे हैं, समाज के भीतर सत्यनिष्ठा की संस्कृति को विकसित करने की अनिवार्यता और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। सत्यनिष्ठा की संस्कृति सुशासन, विकसित अर्थव्यवस्था, सामाजिक एकजुटता को बढ़ावा एवं नागरिकों के उच्च जीवन स्तर के लिए मार्ग प्रशस्त करती है और अपने नागरिकों के लिए जीवन की गुणवत्ता बढ़ा सकती है। सत्यनिष्ठा की विशेषताओं में परस्पर सम्मान, ईमानदारी, अनुग्रह, जिम्मेदारी, धैर्य, कड़ी मेहनत और जवाबदेही शामिल हैं। ईमानदारी, परिस्थितियों की परवाह किए बिना हमेशा सच बोलने का अभ्यास तथा अपने कर्तव्यों को निर्वहन पारदर्शिता से करने का एक महत्वपूर्ण विकल्प है। ईमानदार व्यक्ति अपनी

गलतियों को स्वीकार करता है और उनसे सीखने की कोशिश करता है। ईमानदारी एक ऐसा विकल्प है जिसे हम चुनते हैं और यह एक ऐसा विकल्प है जिसे हमें अपने जीवन के हर पल या मोड़ पर चुनते रहना चाहिए।

ईमानदारी को अक्सर व्यक्तिगत चरित्र की आधारशिला के रूप में प्रचारित किया जाता है, लेकिन इसका महत्व व्यक्तिगत आचरण से कहीं आगे तक फैला हुआ है। यह एक सांस्कृतिक अनिवार्यता है जो राष्ट्रों के ताने-बाने को आकार देती है। सत्यनिष्ठा की संस्कृति मज़बूत नींव है जो राष्ट्र के संवैधानिक ढांचे को आकार देती है। सत्यनिष्ठा मज़बूत नैतिक सिद्धांतों का गुण है जिसका कोई भी व्यक्ति बिना किसी समझौते के पालन करता है। सत्यनिष्ठा की संस्कृति में ईमानदारी, पारदर्शिता, जवाबदेही और नैतिक व्यवहार जैसे गुण शामिल हैं, जो सामूहिक रूप से राष्ट्रीय समृद्धि में योगदान करते हैं। किसी राष्ट्र के सामाजिक एवं आर्थिक विकास के लिए सत्यनिष्ठा की संस्कृति का नीतियों एवं नियमों के केंद्र बिंदु में होना अनिवार्य है। सत्यनिष्ठा की संस्कृति को बढ़ावा देने से राष्ट्रीय समृद्धि का विकास विभिन्न बिंदुओं, जैसे प्रशासन में सुधार, आर्थिक प्रदर्शन में वृद्धि, मज़बूत सामाजिक एकजुटता और नागरिकों के लिए जीवन की बेहतर गुणवत्ता इत्यादि द्वारा हो सकता है।

**आर्थिक प्रदर्शन में वृद्धि:** सत्यनिष्ठा की संस्कृति न केवल निवेश को आकर्षित करती है बल्कि यह भी सुनिश्चित करती है कि विकास और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए संसाधनों का प्रभावी ढंग से उपयोग किया जाए। सत्यनिष्ठा की संस्कृति और आर्थिक प्रदर्शन के बीच संबंध सबको अच्छी तरह से ज्ञात है। ईमानदारी निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा, नवाचार और संसाधनों के कुशल आबंधन को बढ़ावा देती है। नैतिक प्रथाओं में निहित व्यवसाय निवेश को आकर्षित करते हैं तथा आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करते हैं जिससे नौकरियां पैदा होती हैं तथा कुशल मानव संसाधन का विकास होता है। निवेशक उन अर्थव्यवस्थाओं में धन लगाने के इच्छुक होते हैं जहां उन्हें भरोसा होता है कि नियमों का पालन नैतिक एवं पारदर्शित ढंग से किया जाता है एवं उनका निवेश भ्रष्ट प्रथाओं से सुरक्षित है। इसके अलावा, जो राष्ट्र सत्यनिष्ठा की संस्कृति को प्राथमिकता देते हैं वे अक्सर ऐसे मज़बूत संस्थानों का उदय होते हुए देखते हैं जो उद्यमशीलता को बढ़ावा देते हैं और व्यापार को सुविधाजनक बनाते हैं। दूसरी ओर, भ्रष्टाचार आर्थिक विकास को अवरुद्ध कर सकता है। इससे अक्सर संसाधनों का गलत आबंधन होता है, जहां धन को बुनियादी ढांचे और सामाजिक सेवाओं के बजाय रिश्तत और दलाली में लगा दिया जाता है। ईमानदारी की कमी के परिणामस्वरूप अकुशल बाज़ार बन सकते हैं, जिनमें निवेश में बाधाएं आ सकती हैं जिससे नए व्यवसायों को उभरने से हतोत्साहित किया जा सकता है। इससे आर्थिक स्थिरता का एक चक्र बन सकता है जिसे तोड़ना मुश्किल है।

**प्रशासन में सुधार:** किसी भी संपन्न राष्ट्र के केंद्र में एक प्रभावी शासन संरचना होती है जो उसके नागरिकों के विश्वास पर कायम रहती है। जब राजनेता और राष्ट्रीय संस्थान ईमानदारी, पारदर्शिता और जवाबदेही के साथ काम करते हैं, तो सामान्य नागरिकों के अपने राजनेताओं एवं संबंधित कर्मचारियों के साथ सकारात्मक रूप से जुड़ने और नागरिक प्रक्रियाओं में भाग लेने की अधिक संभावना होती है। यह विश्वास राजनीतिक एवं सामाजिक स्थिरता में तब्दील होता है, जो राष्ट्रीय समृद्धि के लिए महत्वपूर्ण है। इसके विपरीत एक सामाजिक बीमारी, भ्रष्टाचार, जो बेईमानी की संस्कृति को जन्म देता है, सबसे आशाजनक अर्थव्यवस्थाओं को भी पटरी से उतार सकता है। उच्च स्तर के भ्रष्टाचार वाले देश अक्सर खराब शासन एवं अशांत सामाजिक वातावरण का अनुभव करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप मानवीय एवं आर्थिक संसाधन बर्बाद होते हैं और सार्वजनिक सेवाएं ठप्प पड़ जाती हैं।

**मज़बूत सामाजिक एकजुटता:** जब व्यक्ति और संस्थान एक बुनियादी नैतिक ढांचे के भीतर काम करते हैं, तो वे समुदाय और अपनेपन की भावना में योगदान करते हैं। सत्यनिष्ठा की संस्कृति नागरिकों के बीच साझा मूल्यों और आपसी सम्मान को बढ़ावा देकर सामाजिक एकता को बढ़ावा देती है। यह नैतिक आधार नागरिक ज़िम्मेदारी को प्रोत्साहित करता है, जहां नागरिक सामाजिक मुद्दों में शामिल होने, अपने अधिकारों की वकालत करने और नेताओं को जवाबदेह ठहराने में सशक्त महसूस करते हैं। शांति और स्थिरता बनाए रखने के साथ-साथ एक सहयोगी वातावरण को बढ़ावा देने के लिए सामाजिक एकजुटता आवश्यक है जहां विविध समूह सामान्य लक्ष्यों के लिए मिलकर काम कर सकें। अखंडता से ओत-प्रोत समाज, शिक्षा और सामाजिक न्याय को प्राथमिकता देता है जिससे यह सुनिश्चित होता है कि सभी नागरिकों को सफलता के समान अवसर मिलें। यह समावेशिता न केवल राष्ट्रीय पहचान को मज़बूत करती है बल्कि किसी राष्ट्र की सामूहिक, बौद्धिक और सांस्कृतिक पूंजी को भी समृद्ध करती है। इसके परिणामस्वरूप कुशल कार्यबल द्वारा सुदृढ़ एवं मज़बूत अर्थव्यवस्था का निर्माण होता है जो देश के चहुमुखी विकास में महत्वपूर्ण है।

**नागरिक जीवन स्तर में गुणवत्ता:** गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा और सामाजिक सेवाओं तक पहुंच, सरकार के प्रभावी कामकाज तथा सार्वजनिक अधिकारियों एवं निजी उद्यमों दोनों की नैतिक प्रथाओं पर निर्भर है। सत्यनिष्ठा की संस्कृति का राष्ट्रीय समृद्धि पर व्यापक प्रभाव सामान्यतया इसके नागरिकों के जीवन की बेहतर गुणवत्ता में देखा जाता है। जो राष्ट्र सत्यनिष्ठा की संस्कृति को अपनाते हैं, वे अपनी मानव पूंजी में अधिक निवेश करते हैं जिसके परिणामस्वरूप गरीबी का स्तर कम होना, जीवन प्रत्याशा अधिक होना एवं शैक्षिक परिणाम बेहतर इत्यादि सकारात्मक प्रभाव समाज में बृहद तरीके से होते हैं। जब प्रशासन एवं सरकार ईमानदारी के साथ काम करने की प्रथा नागरिकों को विश्वास पैदा करती है तब नागरिकों के सामुदायिक निर्माण में संलग्न होने और समाज में सकारात्मक योगदान देने की अधिक संभावना होती है, जिससे जीवन स्तर की समग्र गुणवत्ता में वृद्धि होती है।

जो राष्ट्र सत्यनिष्ठा की संस्कृति को प्राथमिकता देते हैं, वे न केवल अपने लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ाते हैं, बल्कि स्थाई समृद्धि के लिए आधारशिला भी रखते हैं। वर्तमान में सत्यनिष्ठा सिर्फ एक नैतिक विकल्प नहीं है, बल्कि सफलता के लिए एक रणनीतिक आवश्यकता है। ●●●

संदर्भ सूची : विकिपीडिया एवं इंटरनेट पर संबंधित लेख।



**पूरन सिंह,**  
वैज्ञा/इंजी-एसडी, एसपीआरई



**जाधव दशरथ श्रीहरि**  
स्नातकोत्तर अध्यापक  
वीएसएससी केंद्रीय विद्यालय

## संघर्ष (माँ को समर्पित)

जीवन की चाल बड़ी अनोखी है  
पल-पल आहुतियों की भूखी है,  
खुद को ज्वाला में झोंक कर  
हर एक आहुति की प्यास बुझाऊंगा।

संघर्ष करता रहूंगा....

फूलों का आसन हो या  
शूलों का सिंहासन हो,  
सूख जाए नदी बिना मिले सागर से  
मरू देश में कंटीले वृक्ष उगाऊंगा।

संघर्ष करता रहूंगा....

रंज नहीं किसी को खोने का  
अकेले छुपकर रोने का,  
छूटती आखिरी श्वास पर भी  
अश्रुओं की मौक्तिक माल्य सजाऊंगा।

संघर्ष करता रहूंगा....

जो भी मिला उसे लेता चला  
काल के अभ्याघात को सहता चला  
खड़ी हो दीवारें कितनी भी राहों में  
उन्हीं पर मंजुल महल बनाऊंगा।

संघर्ष करता रहूंगा....

जिंदगी एक मेला है  
कुछ दिनों का खेला है  
हारू कितनी भी बार मैं  
एक दिन जय पर फतह पाऊंगा।

संघर्ष करता रहूंगा....

## व्यापार-ए- व्यवहार

आसमान में मिट्टी और ज़मीन पर तारे हैं,  
पानी में आग और बादल थके हारे हैं,  
जन-जन की उम्मीदों की फ़सल कैसे आएगी ?  
जहां सारे भ्रष्ट और स्वार्थ के मारे हैं।

भूखे-प्यासे संपन्न और धनवान यहां बेचारे हैं,  
आतंक की पक्की दीवार और समता में दरारें हैं,  
समस्याओं की आग लगाकर रोटी जो सेंके,  
होगी क्या हिफाज़त देश की! यहां सारे लुटेरे हैं।

खून की हो रही बारिश और सूखी डाली पर पत्ते हरे हैं।  
चांद में सूरज-सी तपिश और शीत में अंगारे हैं,  
मतलब के तूफान में विश्वास का बंवड़ बनकर  
ज़िंदा है इंसान, पर अंदर से सारे मरे हैं।

तमाम खोटे आज खरे हैं और सूरमा सारे डरे हैं,  
मन के पक्के अब कच्चे हैं और अच्छे सारे बुरे हैं,  
व्यवहार का बना व्यापार, मूल्य सारे बिक गए  
हर वक्त धुलते हैं चेहरे, मगर चरित्र सारे गिरे हैं।



**आकांक्षा श्रीवास्तव**  
श्री राकेश कुमार श्रीवास्तव,  
वैज्ञा/इंजी-एससी, एमवीआइटी की पत्नी

# परिश्रम है कल्पवृक्ष



पुरु अभी सोलह वर्ष का ही था कि अचानक उसके पिताजी की मृत्यु हो गई। उससे छोटे तीन भाई-बहन थे। सभी पढ़ रहे थे, पुरु स्वयं हाई स्कूल का छात्र था। किसीने सोचा भी न था कि पिताजी बीच मझधार में परिवार की नौका छोड़कर यों एकाएक चले जाएंगे। माँ तो इस आकस्मिक प्रहार से जैसे मुमुर्ष-सी ही हो गई थी। पुरु का हृदय भी कम आहत न था, पर वह अपने आँसू चुपचाप पीकर माँ को समझाया करता। वह कहता – “माँ, तुम बिलकुल भी चिंता न करो। बस एक- दो वर्ष मुझे और पढ़ा दो, मैं जल्दी ही नौकरी खोज लूँगा”।

माँ उससे तो कुछ न कहती, पर वह निरंतर यही सोचती कि

जब अच्छे पढ़े-लिखे युवकों को नौकरी मिल नहीं रही है तो उनके बेटे को नौकरी कैसे मिलेगी? घर का खर्च चलाने के लिए उन्होंने सिलाई-बुनाई, पापड़-ढाड़ी बनाना आदि छोटे-मोटे काम करना प्रारंभ कर दिया। पड़ोसियों ने प्रारंभ में दो-चार बार कुछ व्यंग्य-सा किया, फिर वे भी चुप हो गए। यही नहीं, कुछ दिनों बाद वे उनके यहां समान लेने भी आने लगे, क्योंकि पुरु की माँ थोड़ा करती थी, पर जो भी बनाती थी वह अच्छा बनाती थी और वस्तुएं शुद्ध सामग्री से बनाती थी। अपने बच्चों को भी वे सदैव ईमानदारी और परिश्रम से कार्य करने की अनेक शिक्षाएं दिया करती थी।

पिताजी के फंड-पेंशन और माँ के परिश्रम से घर की गाड़ी जैसे-तैसे चलने लगी थी, परंतु पुरु इससे संतुष्ट न था। वह निरंतर प्रयास करता रहता कि उसे कोई अच्छी नौकरी मिल जाए। बच्चों के तीन-चार ट्यूशन उसने ले लिए थे। वह शाम को बच्चों को पढ़ाता था और उससे अपनी पढ़ाई-लिखाई आदि का पूरा ही खर्चा निकाल लेता था।

एक बार डाक विभाग में रिक्त स्थान निकला। पुरु ने तुरंत आवेदन पत्र भेज दिया। कुछ मित्रों ने कहा था कि छोटी-मोटी क्लर्की से क्या? किसी अच्छी नौकरी की तलाश करो। परंतु पुरु कुछ दूसरी ही बात सोचता था। इस समय तो उसे नौकरी की नितांत आवश्यकता थी, भले ही वह छोटी-मोटी ही क्यों न हो। वह जानता था कि अपनी प्रतिभा और परिश्रम के बल पर वह निरंतर प्रगति करता जाएगा।

परीक्षा में पुरु को पांचवां स्थान प्राप्त हुआ। बीए की परीक्षा का उसने प्राइवेट फॉर्म भर दिया। ट्रेनिंग की समाप्ति के तुरंत बाद ही स्थानीय डाकघर में क्लर्क के पद पर पुरु की नियुक्ति हो गई।

जिस दिन पहली बार नौकरी पर गया था, पुरु बहुत प्रसन्न था। वह स्वावलंबी जो बन गया था। भले ही नौकरी छोटी थी, परंतु वह परिवार की सहायता करने में समर्थ था। प्रथम दिन ही माँ ने उसे समझाया था – “बेटा! काम को भगवान की पूजा समझकर करना। कोई काम न छोटा है और न बड़ा। ईमानदारी और परिश्रम से किया जानेवाला प्रत्येक अच्छा काम बड़ा है। सदैव यह बात ध्यान रखना। ईमानदारी और परिश्रम की कमाई ही समस्त परिवार में सुख और शांति लाती है, भले ही वह सीमित ही क्यों न हो”।

पुरु ने जल्दी से ही अपने कार्य से सब अधिकारियों का मन जीत लिया। न कभी वह देर से आता था, न कोई कामचोरी और लापरवाही करता था। सौंपे गए काम को बहुत ही ज़िम्मेदारी से करता था। जल्दी ही वह अधिकारी वर्ग का विश्वासपात्र बन गया। साथियों के साथ भी उसका व्यवहार बहुत ही शिष्ट और मधुर था। अतएव जल्दी ही उनका भी स्नेही बन गया।

पुरु को कार्य करते हुए थोड़ा ही समय बीता था, परंतु वह उत्तरदायी व्यक्ति समझा जाने लगा था। अधिकारी उसे महत्वपूर्ण कार्य विश्वासपूर्वक सौंप देते थे। उसकी कुशलता और ईमानदारी का परिणाम यह हुआ कि एक अधिकारी जब जाता था तो दूसरे से स्वतः ही उसकी प्रशंसा गोपनीय रूप से कर जाता था। अधिकारी उसे आगे बढ़ने का प्रोत्साहन देते। पुरु जल्दी-जल्दी परीक्षाएं उत्तीर्ण करता गया, पदोन्नति पाता गया। परिणाम यह हुआ कि कुछ ही वर्षों में वह अधिकारी बन गया।

प्रायः देखा जाता है कि उच्च पद पाकर व्यक्ति अभिमानी बन जाते हैं। अपने अधीनस्थों से रूखा और कठोर व्यवहार करते हैं। परंतु पुरु में तनिक भी दंभ नहीं आया था। उसका स्वभाव और व्यवहार अपरिवर्तित था। कार्य के प्रति भी वह पहले जैसा ही गंभीर और ईमानदार था। निरंतर आगे बढ़ते रहने की अभी उसमें असीम कामना थी। परिणाम यह हुआ कि धीरे-धीरे प्रगति करता हुआ वह डाकघर के निदेशक के पद पर पहुंच गया। समाज में गरीब, बेरोज़गार युवकों के लिए वह प्रेरक उदाहरण बन गया। सच है, दृढ़-संकल्प, ईमानदारी और परिश्रम से मनस्वी, कांटे भरे मार्ग को भी सुरक्षित कर लेते हैं।



# नारी शक्ति का सम्मान



## सोणिया वाशर्णय

श्री सुकरात गुप्ता,  
वैज्ञा/इंजी-एसएफ, एवीएन की पत्नी

अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय, प्रदेश, नगर और गाँव, किसी भी स्तर पर आप देख सकते हैं कि एक नारी विभिन्न क्षेत्रों में अपनी पूरी प्रतिभा के साथ अपनी भूमिका निभा रही है।

जिस प्रकार से आज के युग में नारी सशक्तिकरण हो रहा है, नारी अपने मौलिक अधिकारों का पूर्ण स्वतंत्रता के साथ प्रयोग करते हुए कानून व्यवस्था, शिक्षा, सरकारी कार्यालय, एयरलाइन, स्टार्टअप, टीवी चैनल, टैक्सटाइल आदि जैसे हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही है।

नारी प्राचीन काल से ही वंदनीय मानी गई है। एक नारी राष्ट्र निर्माण में अपना पूरा योगदान देती है। सम्मान की भावना हमारे घर से ही प्रारंभ होनी चाहिए। जब हम अपने माता-पिता, भाई-बहन, चाचा-चाची को सम्मान देते हैं, तो हमारे बच्चे भी इसे सीखते हैं और इसका पालन करते हैं। बच्चों की प्रथम पाठशाला उसका घर-परिवार होता है और प्रथम शिक्षक माँ (नारी) होती है। बच्चों को संस्कार देने का कार्य माँ द्वारा किया जाता है। बच्चों के चरित्र निर्माण की पृष्ठभूमि घर से ही तैयार होती है, जिसका मुख्य अंग माँ है।

अगर हम इतिहास के पन्ने पलटकर देखे तो मदर टेरेसा, कस्तूरबा गाँधी, किरण बेदी, कल्पना चावला, महादेवी वर्मा, प्रतिभा पाटिल और वर्तमान में द्रौपदी मुर्मू, निर्मला सीतारमन जैसी महिलाएं अपने-अपने कार्य-क्षेत्र में मुख्य भूमिका निभाती आ रही हैं। जिस देश में नारी शक्ति को सम्मान दिया जाता है

उस देश का हित निश्चित है।

कितनी बार हमने देखा है कि गुणों में निपुण होने के बावजूद भी एक नारी अपनी पारिवारिक ज़िम्मेदारियों की वजह से अपनी नौकरी के साथ समझौता कर लेती है। अपनी इच्छाओं को दबाकर वह अपने परिवार को प्राथमिकता देती है, जिसके भविष्य में उसे मलाल होता है। इस लेख के माध्यम से मैं चाहती हूँ कि देश की हर नारी के सम्मान और हित के लिए देश के प्रत्येक नागरिक अपना योगदान दें।

जहाँ नारी का सम्मान, वहाँ देश का सम्मान !

जब घर का बेटा पढ़ता है तो सिर्फ वह अपना भविष्य बनाता है और अपने ही परिवार की ज़िम्मेदारी को पूरा करता है। लेकिन जब एक बेटी पढ़ाई करती है तो विवाहोपरान्त वह दो परिवार के भविष्य को सुधारती है। वह अपनी क्षमता से ज़्यादा करने की कोशिश करती है।

आज पूरे देश में 'बेटी पढ़ाओ और बेटी बचाओ' नारा गूँज रहा है। नारी ही सुखद भविष्य की जननी है।

इसलिए पूरे परिवार की यह ज़िम्मेदारी बनती है कि वह अपनी बेटी को पढ़ाएं और उसे आगे बढ़ने में अपना सहयोग दें।

भगवान ने नारी को इतना प्रतिभावान बनाया है कि वह एक साथ कई काम कर सकती है। इसलिए कभी भी इसकी क्षमताओं को कम ना आकें। एक माँ ही है जो अपने बच्चों के मन में 'वसुदेव कुटुम्बकम्' की भावना डालती है जिससे वह पूरे संसार को ही अपना परिवार माने और हमेशा संसार के हित में सोचे।

नारी वंदनीय है। नारी का सम्मान सर्वोपरी है।

# हमारा आश्चर्यजनक व्यवहार



**विपिन कुमार यादव**  
वैज्ञानिक/इंजी-एसएफ एसपीएल

आपने कभी गौर किया है कि कुछ स्थानों पर हम मनुष्य भी अक्सर अजीब-सा व्यवहार करते हैं। यदि आप कभी ध्यान दें तो आप पाएंगे कि हमारे आस-पास ऐसे कई लोग मौजूद रहते हैं जिन्हें हमेशा हर बात में जल्दी रहती है। जैसे किसी डिपार्टमेंटल स्टोर से सामान लेने की जल्दी जिसमें उन्हें बिल बनवाते समय याद आता है कि अरे एक वस्तु तो वो भूल गए हैं और फिर उसे लेने के लिए दौड़ रहे होते हैं। इस प्रकार के लोग

हरेक स्थान पर आपा-धापी मचाते हैं फिर चाहे वह एयरपोर्ट हो, रेलवे स्टेशन या फिर कोई बस स्टैंड। न जाने ये लोग इस प्रकार किस से, कहाँ और क्यों भाग रहे हैं या फिर इस तेज़ रफ्तार ज़िंदगी की इस भाग-दौड़ में इनका या सामान्यतः हम सब का स्वभाव ही इस तरह का हो गया है।

आप एक एयरपोर्ट पर पहुँचते हैं तो पाएँगे कि प्रत्येक यात्री को एयरपोर्ट के भीतर घुसने की जल्दी है हालांकि उनमें से कई की उड़ान में अभी कई घंटे शेष हैं!!! भारत के बड़े हवाई अड्डों जैसे दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु, आदि में भीतर जाने के लिए सामान्यतः लाइन लगानी पड़ती है और जब आप भीतर पहुँच जाते हैं तो पाएँगे कि अब जल्दी-से-जल्दी अपना सामान एक्स-रे से पास करवा लेने की हड़बड़ी मची है हालांकि यह प्रक्रिया त्रिवेन्द्रम जैसे छोटे हवाई अड्डों पर ही होती है, दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु, आदि बड़े हवाई अड्डों पर नहीं। एक्स-रे के बाद हरेक यात्री को चैक-इन करने की जल्दी है। चैक-इन करवा लेने के पश्चात भी इनको चैन नहीं है और आप पाएँगे कि अब सभी यात्री शीघ्रातिशीघ्र सुरक्षा-जाँच (सेक्युरिटी-चेक) करने की भाग-दौड़ में जुटे हैं और अपने सामान की ट्रे एक्स-रे मशीन में दूसरों से पहले घुसाने को लेकर होड़ मची है। सुरक्षा-जाँच के बाद इस दृश्य में थोड़ा बदलाव व ठहराव दिखाई देता है जब सभी यात्री अपने बोर्डिंग-द्वार के निकट बैठे होते हैं। यहाँ आपको तीन प्रकार के यात्री दिखाई देंगे – एक वह जिनके लिए हवाई यात्रा एक सामान्य बात है तथा जो सिर्फ अपने मोबाइल में ही व्यस्त रहते हैं; इन्हें इससे कोई मतलब नहीं है कि उनके आसपास क्या चिल्लपों मची है!! दूसरे वह जो हवाई यात्रा तो करते हैं किन्तु इन यात्राओं के बीच में काफी अंतराल रहता है; ये हवाई अड्डे में यह देखते रहते हैं कि उनकी पिछली यात्रा के बाद से इस टर्मिनल में क्या-कुछ बदल गया है। तीसरे वह जो पहली बार हवाई यात्रा कर रहे हैं एवं इनमें बच्चे, युवा व बुजुर्ग सभी सम्मिलित होते हैं। इनके लिए यह यात्रा एक पर्व के आयोजन सरीखी होती है जिसके प्रत्येक चरण का यह आनंद लेते हैं तथा जिसको यादगार बनाते हुए यह चित्र खींचते रहते हैं जिससे बाद में यह अपने परिवार के अन्य सदस्यों अथवा अपने मित्रों को दिखाकर धाक जमा सकें। अब स्थिति यह है कि जैसे ही बोर्डिंग का समय निकट आने लगता है, सभी



नहीं, किन्तु कुछ यात्री बेचैन होने लगते हैं व बोर्डिंग-द्वार के निकट एयरलाइन के कर्मचारियों से बोर्डिंग के संभावित समय की बार-बार पूछताछ करने लगते हैं। हद तो तब हो जाती है जब यह दिखाई देते हुए भी कि अभी तक विमान बोर्डिंग-द्वार से सम्बद्ध ऐरोब्रिज पर नहीं लगा है, कुछ यात्री बोर्डिंग-द्वार के निकट एक पंक्ति बना लेते हैं तथा एयरलाइन के कर्मचारियों से बोर्डिंग शीघ्र आरंभ करने का आग्रह करते हैं। अरे जनाब, अभी जब विमान ही नहीं आया है तो बोर्डिंग कहाँ करोगे, बादलों पर!!! अब अगले दृश्य पर चलते हैं, यहाँ विमान बोर्डिंग-द्वार से सम्बद्ध ऐरोब्रिज पर लग चुका है तो अब यात्रियों में विमान पर पहले चढ़ने की मानो होड़ लग जाती है जो मेरी समझ से बिलकुल परे है। अभी बोर्डिंग आरंभ होने की उद्घोषणा भी नहीं हुई होती है कि बोर्डिंग-द्वार के सामने एक लंबी कतार लग जाती है!! जब आपका बोर्डिंग-पास आपके अधिकार में है जिसमें आपका सीट नंबर लिखा हुआ है तो इसका सामान्य-सा अर्थ यह है कि आप विमान में पहले चढ़ें या बाद में आपकी सीट पर, कम-से-कम इस यात्रा में, आपके अलावा और कोई नहीं बैठेगा। किन्तु फिर भी एक दौड़ लगी हुई है!!! विशेष रूप से उन यात्रियों को जिनकी सीट खिड़की के निकट वाली नहीं है उन्हें तो बिलकुल जल्दबाज़ी नहीं करनी चाहिए क्योंकि जब खिड़की वाला व्यक्ति आएगा तो आपको झक-मारकर उसे रास्ता देने के लिए अपनी सीट से उठना ही पड़ेगा। इस बात पर जब मैंने अपने एक मित्र से विचार-विमर्श किया तो उसका कहना था कि अमूमन लोग-बाग विमान में चढ़ने की जल्दबाज़ी इसलिए करते हैं कि उन्हें अपने केबिन बैग रखने के लिए ऊपर बने समान-कक्ष में पर्याप्त स्थान मिल सके। तो इस पर मेरा तर्क यह था कि मैं अब तक तीन-सौ से अधिक हवाई यात्राएँ

देश-विदेश में कर चुका हूँ और मैंने आज तक ऐसा नहीं पाया जब कभी किसी यात्री के सामान के लिए ऊपर बने समान-कक्ष में जगह ना हो!! अतः यह तर्क इस आपाधापी का कोई ठोस कारण नहीं है। इसके विपरीत अंत में विमान पर चढ़ने वालों का सामान ऊपर बने समान-कक्ष में सबसे आगे रखा होता है जिसे पहले उतारा जाता है जिससे वे विमान से खुद भी दूसरों से पहले उतर सकते हैं!! इसी कारण से आजकल एयरलाइन्स पीछे की सीटों पर बोर्डिंग पहले आरंभ करती हैं जिससे आगे बैठे यात्री अंत में सुगमता से विमान पर चढ़ सकें।

ऐसे ही जल्दबाज़ लोगों को सबक सिखाने के लिए आजकल मैं खिड़की के निकट वाली सीट का चयन करता हूँ तथा जान-बूझ कर विमान में सबसे अंत में प्रवेश करता हूँ। इसके तीन लाभ हैं: एक - यदि आप विमान में सबसे अंत में प्रवेश करते हैं तो उसमें सवार सभी यात्री एवं विमानकर्मी दल आप ही को देख रहे होते हैं एवं आप सबके आकर्षण का केंद्र बन जाते हैं किन्तु आप ऐसे दर्शाते हैं जैसे यह आप के लिए एक सामान्य बात है!! दो - आप से पहले पहुँच कर तथा उस सीट पर बैठकर तथा इसे एक उपलब्धि समझने वाले लोगों को आपने एक सबक सिखाया कि खिड़की की सीट वाले व्यक्ति को रास्ता देने के लिए उनको उठना पड़ा तथा तीन - आपके बीच की सीट वाला यात्री अंत तक यह उम्मीद करता रहता है कि शायद खिड़की की सीट वाला यात्री (यानि कि आप) ना आएँ तथा वह आराम से उस खिड़की की सीट पर बैठ जाए। ऐसे व्यक्ति को एकदम अंतिम समय पर पहुँच कर निराश करने का एक अलग ही आनंद है जो केवल आप को मिलता है!!! इसके अतिरिक्त मुझे अंत में विमान में प्रवेश करने का एक बार यह लाभ भी हुआ कि मैं बेंगलुरु से चेन्नई तक एयर इंडिया इकॉनमी श्रेणी का टिकट होने के बावजूद बिजनेस श्रेणी में यात्रा करके गया। वो हुआ यों कि ओवर बुकिंग होने के कारण एक ही सीट के दो बोर्डिंग-पास जारी कर दिए गए। जब मैं अपनी सीट पर पहुँचा तो पाया कि वहाँ कोई और बैठा हुआ है जिसके पास भी उसी सीट का एक वैध बोर्डिंग-पास है। जब मैंने यह विमान-परिचारिका को बताया तो उसने मुझे विमान में किसी भी खाली सीट पर बैठने को कहा जो केवल बिजनेस श्रेणी में ही उपलब्ध थी। अतः मैं वहाँ आराम से बैठ गया एवं इसका दूसरा लाभ यह हुआ कि जहाँ इकॉनमी श्रेणी के यात्रियों को मात्र एक सैक व फलों के रस की एक छोटी सी बोटल मिली वहीं हमें (बिजनेस श्रेणी को) पूरा भोजन परोसा गया!!! ऐसा मेरे साथ दो-तीन और बार भी हो चुका है - त्रिवेन्द्रम-मुंबई एवं दिल्ली-त्रिवेन्द्रम उड़ानों पर परंतु ये सभी उड़ानें भी एयर-इंडिया और विस्तारा की थीं।

अब आगे बढ़ते हैं, अंततः हमारे विमान ने उड़ान भरी एवं अपने गंतव्य स्थान पर पहुँच कर वहाँ एयरपोर्ट पर उतर गया है। अब जिस सीट पर यात्री एक-दो या तीन घंटों से बैठे थे अचानक उस पर काँटे उग आते हैं तथा विमान के ऐरोब्रिज पर लगने



से पहले ही ये यात्री उठ खड़े होते हैं मानो इन्हें किसी अति-महत्वपूर्ण मीटिंग में जाना हो। महाशय, यदि आप इतने ही महत्वपूर्ण व्यक्ति होते हैं जिनका समय इतना कीमती है तो या तो आप किसी चार्टर्ड उड़ान से आते या फिर आपके पास अपना खुद का विमान होता!!! इस पर मेरे मित्र का तर्क था कि शायद इन व्यक्तियों को वाशरूम जाने की जल्दी हो। एक या दो व्यक्तियों के संदर्भ में यह सही हो भी सकता है किन्तु 20-30 लोगों के लिए यह तर्क गले नहीं उतरता। इस पर भी तुरा यह कि यदि आपने अपना कुछ सामान चेक-इन किया हुआ है तो आपकी यह जल्दबाज़ी वैसे भी व्यर्थ है क्योंकि जब तक आप बैल्ट से अपना सामान उठा नहीं लेते आप एयरपोर्ट से बाहर नहीं निकल सकते!!! मैंने अक्सर यह पाया है कि एयरपोर्ट पर अत्यधिक जल्दबाज़ी दिखाने वाले का सामान बैल्ट पर सबसे अंत में आता है व तब तक उसकी सारी जल्दबाज़ी हवा हो चुकी होती है। इसके एकदम विपरीत यदि आप ध्यान से देखेंगे तो यह पाएँगे कि इन्हीं जल्दबाज़ों के बीच कुछ ऐसे भी यात्री होते हैं जो पहली बार हवाई यात्रा कर रहे होते हैं। चूँकि इन्होंने पहली बार किसी एयरपोर्ट में प्रवेश किया है अतः ये वहाँ मौजूद हर वस्तु को ध्यानपूर्वक देखते हुए प्रत्येक कदम उठा रहे होते हैं व लगभग हर जगह पर अपनी एक फ़ोटो ले रहे होते हैं। ये लोग अपनी पहली हवाई यात्रा एवं इससे सम्बद्ध

प्रत्येक क्रिया का भरपूर मजा लेते हैं। इसी क्रम में तीसरी श्रेणी मेरे जैसे लोगों की होती है जो इतनी बार हवाई यात्रा कर चुके होते हैं कि अब उससे भी ऊब चुके हैं!! एक बात और यदि आपने गौर किया हो तो यह कि एयरपोर्ट या विमान में सह-यात्रियों के बीच बातचीत लगभग नगण्य ही होती है व प्रत्येक यात्री बस अपने मोबाइल पर ही व्यस्त रहता है।

अब हम रेलवे स्टेशन पर आते हैं। यहाँ आपा-धापी का स्तर एयरपोर्ट से कई गुना अधिक होता है। चारों तरफ चिल्लपों मची होती है विशेषकर द्वितीय श्रेणी के डब्बों के आस-पास। चूँकि रेल-यात्रा में समान की मात्रा पर कोई विशेष प्रतिबंध नहीं होता है अतः कुछ अपवादों को छोड़ लगभग हरेक यात्री के पास क्षमता से अधिक सामान होता है जिसे सीट के नीचे-ऊपर जमाने में खूब बहस होती है जो ट्रेन के चलने के बाद समाप्त हो जाती है। मोबाइल काल से पहले के समय में लंबी रेल यात्राओं में (24 घंटे से अधिक समय) में केबिन में एक पारिवारिक माहौल बन जाया करता था। यात्रा समाप्त होने के समय टेलीफ़ोन नंबरों व घर के पते का आदान-प्रदान एक सामान्य बात थी किन्तु अब मोबाइल के कारण सभी यात्री बस अपने मोबाइल में ही व्यस्त रहते हैं। इससे रेल यात्रा का आनंद बहुत हद तक घट गया है व इसका कारण भी हमारा अपना एकल व्यवहार ही है।





राकेश कुमार श्रीवास्तव  
वैज्ञा/इंजी., एससी  
एमवीआइटी

# सूरज और चाँद से सीख

सुबह का उगता सूरज नई जिंदगी की शुरुआत होती है। वहीं डूबता सूरज जिंदगी में आराम को दर्शाता है। हर मनुष्य को सूरज के जैसे हर दिन नई सुबह से साथ अपनी नई शुरुआत करनी चाहिए। जिंदगी में चाहे कितना भी अंधेरा हो, कितनी भी तकलीफ़ और परेशानी हो उसे हमेशा याद रखना चाहिए कि हर अंधेरे के बाद सुबह होती है, हर परेशानी का अंत होता है और हर एक दिन एक नया जीवन प्रदान करता है।

अपने सकारात्मक विचारों को हमेशा अपनी ताकत बनाकर रखें। न हों उदास जब कोई काम आपके हिसाब से न हो और लगे की आप हार गए हैं या कहीं बुरी तरह से फंस गए हैं। जब आपको लगे सारे दरवाज़े आपके लिए बंद हो गए हैं और कोई आपकी मदद नहीं कर रहा तो मन का विश्वास इस समय आपके लिए एक तलवार है और सकारात्मक विचार आपके

लिए ढाल है इन दोनों उपकरणों की सहायता से किसी भी प्रकार के जंग को जीत सकते हैं। आपको विश्वास करना होगा कि आप में भी सूरज के जैसे आग है, तब आप जिंदगी के हर जंग को जीत जाएंगे और इस संसार रूपी आसमान में चमकेंगे।

जब मनुष्य सूरज के जैसे चमकने लगता है तो कभी-कभी उसमें गुरूर आ जाता है कि वह बहुत शक्तिशाली और विशाल है पर उसे इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि सूरज को भी एक शाम डूबना ही है मतलब आप बहुत प्रसिद्ध हो या आपके पास सबकुछ है जो आप चाहते हैं तो उसका कभी गुरूर न करें क्योंकि जीवन का अंत तो निश्चित ही है। मनुष्य अपने घमंड के चलते अपनों से दूरी बना लेता है उसे लगता है मैं ही सर्वश्रेष्ठ हूँ पर ऐसी बहुत-सी बातें हैं जो उसे जानने की ज़रूरत है और शायद इन बातों को जानने के बाद वह अपने होने के अस्तित्व

पर एक बड़ा प्रश्न खड़ा कर देगा। हर मनुष्य को ईमानदारी से एक बार यह ज़रूर सोचने की ज़रूरत है कि वह कौन है और इस धरती पर आने का उसका क्या उद्देश्य है? जिन्हें भी इस सवाल का आंशिक उत्तर मिल जाता है और उसकी आभा सूरज के जैसे चमकती है और उनमें चाँद के जैसी सौम्यता भी रहती है। ऐसे मनुष्य का चित्त शांत और शीतल होता है और उनके प्रभाव में आनेवाले सभी को एक सुकून महसूस होता है।

ऐसे लोगों के व्यक्तित्व में सूरज की तरह तेज़ और चमक तो रहती है पर वह किसी से जलते नहीं परंतु दूसरों को रोशनी और शीतलता प्रदान करते हैं। अगर आप अपने आप को ऐसा व्यक्ति बनाना चाहते हैं तो उसका दूसरा उपाय है कि आपको जो कार्य करने मिले उसे पूरी ईमानदारी और जिम्मेदारी से करें और अपने समय का पूरा उपयोग अपने विचार और व्यवहार को सुधारने और अच्छा बनाने में लगाएं। आपको अपनी आदतों में कठोर परिश्रम एवं अनुशासन को अपनाना होगा। एक समय ऐसा आएगा कि आपके अंदर सूरज और चाँद दोनों के गुण आ जाएंगे और आप कमाल के कार्य करेंगे। जब आप सूरज के जैसे चमक बिखेरेंगे तो बहुत से लोग जलेंगे और आपकी उलाहना भी करेंगे और हो सकता है कि कभी-कभी इस गर्मी में आपको भी जलना और तपना पड़े। परंतु यह सकारात्मकता है। यदि आपको अपनों से कभी कुछ परेशानी हो तो उन्हें बताना होगा, समझाना होगा, अपनी तपती सूरज की रोशनी को चाँद बनाना होगा। अपने भीतर के उस शांत, शीतल चाँद को कभी-कभी उगाना होगा और अपने को इस प्यार और शीतल रोशनी से भिगाना होगा और अंत में नारी शक्ति के लिए।

चाँद की तरह शीतल, सौम्य है, देती धीमी  
रोशनी अपनों को, न सूरज तो क्या हुआ,  
ज़रूरत पड़ी तो सूरज भी बन जाएगी,  
अपनी चमक और तेज से सारे संसार में जगमगाएंगी।

...



**सोणिया वाशर्नेय**

श्री सुकरात गुप्ता,  
वैज्ञा/इंजी-एसएफ, एवीएन की पत्नी

## बचपन

टोलियों में संग खेलने जाना,  
वो डगर-डगर लहराना,  
मस्ती में झूम-झूमकर,  
हंसना और हंसाना।

ढूँढती हुई आँखों से,  
घर आकर माँ को पुकारना,  
एक आवाज़ पर माँ आती,  
कहती बेटा भूख लगी।

कल की चिंता न फिक्र,  
हर पल सुहाने थे,  
कोमल मन के साथ,  
सुंदर स्वप्न संजोते।

वो कागज़ की नाव बनाकर,  
बरखा पानी में चलाना,  
झप-झप, झप-झप मस्ती करना,  
झूम-झूम लहराना।

बचपन के वो दिन सुहाने,  
कैसे बीत जाते,  
आँखों के झरोखों से देखते,  
वही दिन पुराने।



# हर कोई सीखता है कुछ खोकर



**कृष्ण मुरारी**  
वरि. सहायक, पीजीए

होता है नवजात का पहला हर्फ\* हँसकर या रोकर  
मुमकिन मात्र यह हो पाता है, कोख का सुख खोकर  
ज़िंदगी का सफर हो पहला या हो उम्र का आखिरी पड़ाव  
बेशक हर कोई सीखता है कुछ न कुछ खोकर।।

दो टूक देखते हैं जहान को नवशिशु, बड़ों की गोद में पलकर  
फिर किताबों से जुड़ते हैं रिश्ते, खिलौनों को भूलकर  
कुछ और दूर ज़िंदगी के डगर पर बढ़ते हैं आगे  
प्यारी शरारतों को दफ़नकर,  
बेशक हर कोई सीखता है कुछ न कुछ खोकर।।

पड़ता है जब ज़िम्मेदारियों से वास्ता  
ठीकरें कराती है तब अच्छे समझ से राब्ता\*  
जवानी की फिरऔनियत\* को छोड़कर  
कंधे बूढ़े होने लगते हैं, पेशे से दो पैसे जोड़कर  
मिलता है तजुर्बा जीवन में, मासूमियत को खोकर,  
कामयाबी की ट्रॉफी जीतता है हर कोई नाकामयाबी से सीखकर  
जज़्बा लिए मुकाम हासिल हो जाता है, सुख-चैन को भूलकर  
बेशक हर कोई सीखता है कुछ न कुछ खोकर।।

ज़िंदगी के सफर में हज़ारों कहानियों को समेटकर  
वृद्ध का दिल रह जाता है, छोटे बच्चे-सा बनकर  
सिखाती है वृद्धावस्था आत्मसंतुष्टि.., ख्वाहिशों का प्याला तोड़कर  
बेशक हर कोई सीखता है कुछ न कुछ खोकर।।

\*हर्फ - मुंह से निकलने वाली ध्वनियों के संकेत/अक्षर या वर्ण

\*राब्ता- मेल/मिलाना

\*फिरऔनियत - अकड़/घमंड या नवाबी झाड़ना



# वर्ष 2023-24 के दौरान वीएसएससी में आयोजित विविध कार्यक्रम

## हिंदी कार्यशाला

### आशुलिपिकों के लिए कार्यशाला

दिनांक 29.05.2023 को केंद्र के क्रय एवं भंडार प्रभाग के कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 15 कर्मचारियों ने भाग लिया। श्रीमती शोभा आर, वरिष्ठ क्रय व भंडार अधिकारी, क्रय एवं भंडार प्रभाग के द्वारा कार्यशाला का औपचारिक उद्घाटन किया गया। उन्होंने कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा के महत्व को समझाते हुए कार्यशाला के सफल आयोजन की शुभकामना दी। इस कार्यशाला के पहले सत्र का संचालन श्रीमती के. आर. रंजिनी, सहायक निदेशक (राजभाषा), पीएमजी द्वारा किया गया,



जिसमें उन्होंने राजभाषा नीति कार्यान्वयन के मुख्य बिंदु एवं राजभाषा कार्यान्वयन में सहायक ई-टूल्स की विस्तृत जानकारी के साथ-साथ इससे संबंधित अभ्यास भी कराया। दूसरे सत्र के संकाय श्री आर. जयपाल, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी (सेवानिवृत्त), आइआइएसटी ने आगे की कार्यशाला का संचालन करते हुए हिंदी के मानकीकरण एवं पत्र व्यवहार से संबंधित अभ्यास करवाया। कार्यशाला में उपस्थित सभी प्रतिभागियों ने इस बहुउपयोगी कार्यशाला का लाभ उठाते हुए संकाय के साथ-साथ हिंदी अनुभाग को धन्यवाद ज्ञापित किया।



### प्रशासनिक क्षेत्र के अधिकारियों के लिए कार्यशाला



दिनांक 03.11.2023 को केंद्र के प्रशासनिक क्षेत्र के अधिकारियों के लिए अर्धदिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस विशेष कार्यशाला में कुल 18 अधिकारियों



ने अपनी प्रतिभागिता दर्ज की। श्री मनोज सी, मुख्य नियंत्रक, वीएसएससी ने कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा की आवश्यकता को बताते हुए कार्यशाला का औपचारिक उद्घाटन किया एवं

कार्यशाला के सफल आयोजन हेतु आशीर्वचन दिए। इस अर्धदिवसीय कार्यशाला के संचालनकर्ता श्री एम जी सोम शेखरन नायर, संयुक्त निदेशक (राजभाषा), अंतरिक्ष विभाग/इसरो द्वारा केंद्र में हिंदी महत्ता, राजभाषा नीति एवं राजभाषा मूल्यांकन रिपोर्ट के अनुसार हिंदी में कार्य करने के लक्ष्य की संपूर्ण जानकारी देने के साथ-साथ प्रशासनिक क्षेत्र से संबंधित शब्दावलियों, उपयोगी हिंदी व्याकरण एवं अनुवाद के अभ्यास भी कराए गए। कार्यशाला में उपस्थित सभी अधिकारियों ने इस फलदायी कार्यशाला को बखूबी सराहा एवं संकाय व आयोजकों के प्रति अपना आभार व्यक्त किया।



## वैज्ञानिक/इंजीनियर 'एससी' व 'एसडी' के लिए कार्यशाला



दिनांक 07.12.2023 को केंद्र में कार्यरत वैज्ञानिक/इंजीनियर 'एससी' व 'एसडी' के लिए अर्धदिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें कुल 18 पदधारियों ने भाग लिया। श्री रोहित कुमार गुप्ता, ग्रुप प्रधान, एमएमई/एमसीटीजी द्वारा इस कार्यशाला का औपचारिक उद्घाटन किया गया। इस कार्यशाला के लिए आमंत्रित श्रीमती रंजिनी के आर, सहायक निदेशक (राजभाषा), मुख्य पोस्टमास्टर जनरल केरल सर्किल

द्वारा सत्र का संचालन किया गया। इस कार्यशाला का मुख्य विषय संघ की राजभाषा नीति, हिंदी के क्षेत्र में जारी विभिन्न आदेश व योजनाएं एवं तकनीकी क्षेत्र में हिंदी के प्रयोग थे जिसे सभी ने ध्यानपूर्वक सुना और समझा। तकनीकी क्षेत्र के पदधारियों के लिए राजभाषा के प्रगामी प्रयोग हेतु आयोजित कार्यशाला के लिए उपस्थित सभी पदधारियों ने हिंदी अनुभाग को धन्यवाद ज्ञापित की।



## लेखा प्रभाग के कर्मचारियों के लिए कार्यशाला



दिनांक 13.02.2024 को लेखा प्रभाग के कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में कुल 19 कर्मचारियों ने भाग लिया। श्री शंकर वी, प्रधान, लेखा/आंविंस ने कार्यशाला में उपस्थित कर्मचारियों को राजभाषा में कार्य निष्पादन करने हेतु प्रोत्साहित करते हुए कार्यशाला का विधिपूर्ण रूप से उद्घाटन किया। श्री सोमदत्तन ए, पूर्व सहायक निदेशक (राजभाषा), आयकर विभाग इस

कार्यशाला के पहले सत्र के संकाय थे। उन्होंने सभी कर्मचारियों का स्वागत किया एवं कार्यशाला का सत्र प्रारंभ करते हुए राजभाषा वार्षिक कार्यक्रम, लेखा संबंधी हिंदी शब्दावलियों व वाक्यांशों के प्रयोग संबंधी अभ्यास कराया। दूसरे सत्र का संचालन डॉ. हर्मन पी जे, सह प्रोफेसर, केरल विश्वविद्यालय द्वारा किया गया। उन्होंने इस सत्र में हिंदी के मानकीकरण, राजभाषा नीति के महत्वपूर्ण बिंदुओं से परिचित कराते हुए हिंदी पत्र व्यवहार के कुछ मानक स्वरूपों का अभ्यास भी कराया। कार्यशाला में उपस्थित रहे सभी प्रतिभागियों ने इस



कार्यशाला के सुव्यवस्थित आयोजन पर अपनी संतुष्टि व्यक्त की तथा निर्बाध ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन पर हिंदी अनुभाग को अपनी कृतज्ञता भी ज्ञापित की।

## प्रशासनिक क्षेत्र के कर्मचारियों के लिए कार्यशाला



केंद्र के प्रशासनिक क्षेत्र के कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन दिनांक 01.03.2024 को किया गया, जिसमें कुल 17 कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला का औपचारिक उद्घाटन केंद्र के श्री हरि के एन, प्रधान, पीजीए द्वारा किया गया। उन्होंने प्रतिभागियों को राजभाषा की विशेषता एवं रा.भा. से संबंधित अंतरिक्ष विभाग द्वारा जारी प्रोत्साहन योजना के लाभ को गिनाते हुए कार्यशाला के सफल आयोजन की शुभकामना दी। इस कार्यशाला के पहले सत्र का संचालन श्रीमती महेश्वरी अम्मा, भूतपूर्व उप निदेशक (राजभाषा), वीएसएससी द्वारा किया गया। उन्होंने हिंदी व्याकरण से



संबंधित विभिन्न अभ्यास एवं राजभाषा नीति के महत्वपूर्ण तत्व से प्रतिभागियों को अवगत कराते हुए सत्र को समाप्त किया। दूसरे सत्र का संचालन श्रीमती सिमी असफ़, सहायक निदेशक (राजभाषा), आइआइएसटी द्वारा किया गया। उन्होंने प्रशासनिक क्षेत्र में हिंदी के कार्यान्वयन के महत्वपूर्ण तत्व एवं हिंदी के प्रयोग हेतु विभिन्न टिप्पणियों एवं शब्दावलियों का अभ्यास कराया। कार्यशाला में उपस्थित सभी प्रतिभागियों ने राजभाषा के संदर्भ में इस उपयोगी कार्यशाला के लिए हिंदी अनुभाग को धन्यवाद ज्ञापित किया।

## वैज्ञानिक/इंजीनियर 'एसई' व उच्चतर श्रेणी के लिए कार्यशाला

दिनांक 14.03.2024 को केंद्र में कार्यरत वैज्ञानिक/इंजीनियर 'एसई' व उच्चतर श्रेणी के लिए अर्धदिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें कुल 20 पदधारियों ने भाग लिया। कार्यशाला का औपचारिक उद्घाटन केंद्र डॉ. अशोक वी, सह निदेशक (आर व डी) के अभिभाषण के साथ किया गया। उन्होंने

कार्यशाला के उपस्थित सभी पदधारियों का स्वागत करते हुए कार्यशाला के सफल आयोजन के लिए शुभकामनाएं दी। इस कार्यशाला के सत्र का संचालन वर्चुअल विधा के माध्यम से डॉ. शंकर कुमार, अंतरिक्ष विभाग, शाखा सचिवालय द्वारा किया गया। तकनीकी क्षेत्र के लिए इस विशेष कार्यशाला में



संकाय के द्वारा संघ की राजभाषा नीति, हिंदी के प्रगामी प्रयोग हेतु जारी विभिन्न आदेश व योजनाएं एवं तकनीकी क्षेत्रों में हिंदी के प्रयोग के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। कार्यशाला



में उपस्थित सभी पदधारियों ने हिंदी अनुभाग को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए इस कार्यशाला के लिए काफी लाभकारी बताया।

## हिंदी माह समारोह - 2023



केंद्र में राजभाषा के प्रचार-प्रसार तथा सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के उद्देश्य से प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी हिंदीतर एवं हिंदी भाषी कर्मचारियों एवं उनके विवाहितीयों एवं बच्चों के लिए अलग-अलग प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

दिनांक 03.10.2023 से 09.10.2023 तक क्रमशः हिंदी टंकण, हिंदी आशुलिपि, स्मृति परीक्षण, टिप्पण एवं आलेखन, श्रुतलेखन, सरल अनुवाद, तस्वीर क्या बोलती है, समाचार पाठन एवं सुलेखन प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। सभी प्रतियोगिता में पदधारियों ने बढ़-चढ़कर अपनी प्रतिभागिता दर्ज की। हर संवर्ग के प्रतियोगिता को मिलाकर कुल 151



पुरस्कार विजेताओं को नकद पुरस्कार प्रदान की गई। इस तरह के वैविध्य प्रतियोगिताओं के आयोजन के लिए प्रतिभागियों ने हिंदी अनुभाग के प्रति अपना साभार प्रकट किया।

## विश्व हिंदी दिवस- 2024



राजभाषा विभाग के अनुदेशों के अनुपालन एवं केंद्र में राजभाषा के कार्यान्वयन हेतु प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी 10 जनवरी, विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर दिनांक 10.01.2024 से 15.01.2024 तक हिंदीतर एवं हिंदी भाषी कर्मचारियों के लिए अलग-अलग प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। हिंदीतर भाषी कर्मचारियों के लिए प्रशासनिक शब्दावली एवं हिंदी वार्तालाप लेखन तथा हिंदी भाषी कर्मचारियों के लिए तस्वीर क्या बोलती है और तकनीकी विषय पर हिंद में लेख प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कर्मचारियों ने इन प्रतियोगिताओं में बड़े उत्साह से साथ भाग लिया। भाग लिए सभी प्रतियोगिताओं में से कुल 23 विजेताओं को नकद

पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। इस तरह की प्रतियोगिताओं के आयोजन के लिए प्रतिभागियों ने हिंदी अनुभाग के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त की।



## अभिमुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन

हिंदी में कार्य करने की अनुपात बढ़ाने के लिए केंद्र में कार्यरत सभी आशुलिपिकों, वरि. परि. सहायकों/वरि. सहायकों/सहायकों के लिए अभिमुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 27.03.2024 को अंतिम दो सत्रों में किया गया। इस अभिमुखीकरण कार्यक्रम में कुल 53 कर्मचारी उपस्थित रहें। दोनों सत्रों की संकाय श्री मनोज कुमार, सहायक निदेशक

(राजभाषा), एलपीएससी ने राजभाषा नियम एवं कार्यालयों में राजभाषा की उपयोगिता और राजभाषा को क्रियान्वित करने की गहनता पर विस्तृत चर्चा की। इस अभिमुखीकरण कार्यक्रम में आए सभी कर्मचारियों ने ऐसे कार्यक्रम के आयोजन की सराहना करते हुए हिंदी अनुभाग को धन्यवाद ज्ञापित की।

# राजभाषा मंजरी



## बोलचाल की हिंदी



दैनंदिन जीवन में, कार्यालयीन कार्यों, विभिन्न संदर्भों आदि के दौरान विचारों को अभिव्यक्त करने हेतु भाषा एक सशक्त माध्यम है। अगर आप हिंदीतर भाषी हैं और आपको निरंतर किसी हिंदी भाषी से संपर्क करना हो, तो वहां भाषा एक समस्या जैसी लगती है। प्रत्येक संदर्भ में प्रत्येक वाक्य का प्रयोग किस प्रकार किया जाना है, इसमें संदेह भी रहता है। इन समस्याओं का समाधान करने हेतु यहां ऐसे ही कुछ वाक्यों के बोलचाल रूप नीचे दिए जा रहे हैं, साथ ही इनसे संबंधित कुछ अभ्यास भी दिए गए हैं।

Uska poorā naam kya hai?	उसका पूरा नाम क्या है?	What is his full name?
Kyaa vah Hindusthani hai?	क्या वह हिंदुस्तानी है?	Is he an Indian?
Kyaa vah khush hai?	क्या वह खुश है?	Is he happy?
Kyaa vah shadi-shuda hai?	क्या वह शादी-शुदा है?	Is he married?
Kyaa vah beemar hai?	क्या वह बीमार है?	Is he ill?
Kyaa vah naraz hai?	क्या वह नाराज़ है?	Is he annoyed?
Kyaa aap Raju ke bhai hein?	क्या आप राजू के भाई हैं?	Are you Raju's brother?
Mez par kyaa hai?	मेज़ पर क्या है?	What is on the table?
Kyaa aapke pass gadi hai?	क्या आपके पास गाड़ी है?	Do you have a vehicle with you?
Kyaa aap Delhi se hein?	क्या आप दिल्ली से हैं?	Are you from Delhi?
Bahar kyaa ho raha hai?	बाहर क्या हो रहा है?	What is happening outside?
Kamre me kyaa hai?	कमरे में क्या है?	What is in the room?
Aapne kyaa kaha?	आपने क्या कहा?	What did you say?

Aap kyaa kam karthi hein?	आप क्या काम करती हैं?	What do you do?
Aapko kya chahiye?	आपको क्या चाहिए?	What do you want?
Kyaa ye chabiyen aapki hein?	क्या ये चाबियाँ आपकी हैं?	Do these keys belong to you?
Kyaa kamre me phone hai?	क्या कमरे में फोन है?	Is there a phone inside the room?
Kyaa ye cheeze bhi aapki hein?	क्या ये चीज़ें भी आपकी हैं?	Do these things also belong to you?
Tumhare haath me kyaa hai?	तुम्हारे हाथ में क्या है?	What do you have in your hand?
Kyaa aapko hindi aathi hai?	क्या आपको हिंदी आती है?	Do you know Hindi?
Aap kya soch rahe hein?	आप क्या सोच रहे हैं?	What are you thinking?
Tumhe kis chees kee zaroorat hai?	तुम्हें किस चीज़ की ज़रूरत है?	What is it that you need?
Aapne kya suna?	आपने क्या सुना?	What did you hear?
Kyaa vah mehanati hai?	क्या वह मेहनती है?	Is he hardworking?
परचून की दूकान/Provision shop		
Namaskar Sir.	नमस्कार सर।	Hello Sir.
Namaskar Bhai.	नमस्कार भाई।	Hello Brother.
Main Aapke liye kya kar sakta hoon?	मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?	What can I do for you?
Kuch parchoon ka saman lene aayaa tha.	कुछ परचून का सामान लेने आया था।	I came to buy some Provisions.
Kya Aap soochi laye hain ?	क्या आप सूची लाए हैं?	Did you bring the list ?
Jee nahin, par main khud chun loonga.	जी नहीं, पर मैं खुद चुन लूँगा।	No, but I will choose it myself.
Koi madad kee zaroorat ho to bataiyega.	कोई मदद की ज़रूरत हो तो बताइएगा।	If you need any help then please tell me.
Jee, bilkul.	जी, बिल्कुल।	Yes, sure.
Snacks kahan rakhe hain?	स्नैक्स कहाँ रखे हैं?	Where are the snacks?
Daayein rack mein upar.	दाएं रैक में ऊपर।	On the right side upper rack.
Taazmahal chay ka chhota packet hai?	ताजमहल चाय का छोटा पैकेट है?	Do you have a small packet of Taazmahal Tea?
Nahin sir, kewal 500 gram ka hai.	नहीं सर, केवल 500 ग्राम का है।	No sir, only have 500 gram packet.
Sarson ka tel, 1 litre wala packet deejiyega.	सरसों का तेल, 1 लीटर वाला पैक दीजिएगा।	Please give 1 litre packet of mustard oil.
Aur kya chahiye sir?	और क्या चाहिए सर?	What more do you want, sir?

Ek kilo badaa wala pyaj aur adha kilo aaloo.	एक किलो बड़ा वाला प्याज और आधा किलो आलू।	One kg of big Onion and half a kg of Potato.
Amul ghee bhi 500 gram ka chahiye.	अमूल घी भी 500 ग्राम का चाहिए।	I want 500 grams of Amul ghee also.
Sir, dabba ya refill pack?	सर, डब्बा या रिफिल पैक?	Sir, box or refill pack?
Dabba wala hi deejie.	डब्बा वाला ही दीजिए।	Give Box itself.
Masale kahan rakhe hain?	मसाले कहाँ रखे हैं?	Where are the spices kept?
Sir, isi rack mein aage milega.	सर, इसी रैक में आगे मिलेगा।	Sir, you'll get it in the same rack towards the front.
Doodh aur dahi bhi chahiye.	दूध और दही भी चाहिए।	I also want milk and curd.
Sir, aakhir mein leejiyega, nahin to kharab ho jayega.	सर, आखिर में लीजिएगा, नहीं तो खराब हो जाएगा।	Sir, please take it last, otherwise it will turn sour.
Aapne bilkul theek kaha.	आपने बिल्कुल ठीक कहा।	You are absolutely correct.
Kya main E-payment kar sakta hoon?	क्या मैं ई-पेमेंट कर सकता हूँ?	Can I do E-payment?
Jee haan Sir.	जी हाँ सर।	Yes sir.
Yah QR code scan kar leejie.	यह क्यूआर कोड स्कैन कर लीजिए।	Please scan this QR code.
Theek hai.	ठीक है।	Okay.

## अभ्यास

निम्नलिखित वाक्यों का हिंदी अनुवाद कीजिए।

1. What is the matter?

2. What are we waiting for?

3. What is in your mind?

4. Is he trustworthy?

5. Is it right?

6. Is it urgent?

7. Can you please give me a bag?

8. Is this fresh stock?

9. Can I have the bill please?

10. Please do not pack detergent and provision together.

1. क्या बात है?
2. हम तुम्हें सामान के लिए पैकेट में सब्जियों को पैक करने से क्यों नहीं कहते हैं?
3. क्या मैं बिल ले सकता हूँ?
4. क्या यह ताज़ा सामान है?
5. क्या यह ठीक है?
6. क्या आप मुझे थोड़ा थोड़ा दे सकते हैं?
7. क्या यह ज़रूरी है?
8. क्या यह ठीक है?
9. क्या हमें इंतज़ार करना है?
10. क्या कोई समस्या है?

उत्तर :



# हिंदी वर्ग पहेली

1	2	3		
4		5	6	
7	8			
	9			

## बाएं से दाएं

1. किसी विषय-वस्तु को मापने का मानदंड (3)
2. वह धन जो सिक्के या रुपए के रूप में हो (3)
3. मान-सम्मान का पर्यायवाची शब्द (3)
4. बदलाव या किसी चीज़ को नए तरीके से करना (4)
5. एक जाति जो मध्ययुग में राजाओं के दरबारों में उनके वंश की कीर्ति या यश का गान करती थी (3)
6. युद्ध/लड़ाई का पर्यायवाची (2)
7. वह घर जिसमें देवी-देवताओं की मूर्ति रखी जाती हो (4)
9. एक घरेलू सेवक या किसी धार्मिक स्थान पर काम करने वाला व्यक्ति हो सकता है (3)

## ऊपर से नीचे

1. किसी व्यक्ति द्वारा किए गए कार्य के बदले में उसे सम्मानपूर्वक पारिश्रमिक के रूप में दिया जानेवाला धन (4)
5. वह व्यक्ति जो मोटर वाहन/इंजन चलाता हो (3)
8. बहुत अधिक बोलनेवाला (3)

1. मानक 2. नकद 3. कर्त 4. नवाचार  
5. चरण 6. रा 7. ट्रेबल 9. चाक 8. बाल

ऊपर से नीचे:

बाएं से दाएं:

उपर

# राजभाषा प्रश्नोत्तरी

1. राष्ट्रपति के आदेश \_\_\_\_\_ के तहत राजकीय प्रयोजन, राजकीय पत्रिकाएं, प्रशासनिक रिपोर्ट अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिंदी भाषा का प्रयोग किया जाना है?  
क. 1955 ख. 1950 ग. 1960 घ. 1952
2. हिंदी शिक्षण योजना के पारंगत प्रशिक्षण के तहत नकद पुरस्कार प्राप्त करने के लिए न्यूनतम कितने प्रतिशत अंक प्राप्त करना आवश्यक है?  
क. 70% ख. 45% ग. 50% घ. 55%
3. श्री अटल बिहारी वाजपेयी, तत्कालीन विदेश मंत्री ने किस वर्ष में पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित किया?  
क. 1978 ख. 1977 ग. 1975 घ. 1976
4. संविधान के अनुच्छेद 210 में किस का वर्णन है?  
क. संसद में प्रयुक्त होनेवाली भाषा  
ख. भारत की संपर्क भाषा  
ग. विधान मंडल में प्रयुक्त होनेवाली भाषा  
घ. राजकीय प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त अंक
5. वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली का गठन कब हुआ।  
क. 1962 ख. 1960 ग. 1950 घ. 1965
6. अधिकारियों द्वारा हिंदी में डिक्टेशन देने को प्रोत्साहित करने के लिए देय प्रथम पुरस्कार राशि क्या है?  
क. ₹ 5000 ख. ₹ 4000 ग. ₹ 6000 घ. ₹ 10000
7. सोलिस का पूर्ण रूप क्या है?  
क. अंतरिक्ष राजभाषा प्रोत्साहन योजना  
ख. अंतरिक्ष राजभाषा पुरस्कार योजना  
ग. विक्रम साराभाई हिंदी मौलिक लेखन योजना  
घ. भारत सरकार की राजभाषा प्रोत्साहन योजना
8. संसदीय राजभाषा समिति में लोकसभा के 20 सदस्यों के साथ राज्यसभा के कितने सदस्यों को मनोनित किया गया है?  
क. 10 ख. 18 ग. 15 घ. 12

1. क 2. घ 3. ख 4. ग 5. क 6. क 7. क 8. क

उत्तरमात्र



## हंसी के गुब्बारे

1. टीचर - लड़कियां अगर पराया धन होती हैं तो लड़के क्या होते हैं?  
गप्पू - सर चोर होते हैं!  
टीचर - वो कैसे??  
गप्पू - क्योंकि चोरों की नज़र हमेशा पराए धन पर होती है।
2. हसबैंड - आज ऐसी चाय बनाओ कि पीते ही तन बदन झूमने लगे और मन नाचने लगे।  
पत्नी - हमारे यहां भैंस का दूध आता है, नागिन का नहीं।
3. सुरेश - तेरे घर से हमेशा हँसने की आवाज़ आती है,  
इतनी खुशी का राज़ क्या है?  
रमेश - मेरी बीवी मुझे जूते मारती है,  
लग जाए तो वो हँसती है,  
नहीं लगे तो मैं हँसता हूँ।
4. चिट्टू - मुझे अपनी बीवी से तलाक चाहिए, वह बर्तन फेंककर मारती है।  
मिट्टू - अभी मार रही है या पहले से ?  
चिट्टू - 5 साल पहले से  
मिट्टू - तो इतने साल बाद तलाक क्यों ?  
चिट्टू - क्योंकि अब उसका निशाना पक्का हो गया है।

5. लड़की से लड़का बोला - डार्लिंग मुझे तुम्हारी आंखों में सारी दुनिया दिखाई देती है।  
पीछे से एक बूढ़ा बोला - हमारी गाय नहीं मिल रही, दिखे तो बता देना बेटा।
6. वकील - हत्या की रात तुम्हारे पति के अंतिम शब्द?  
पत्नी - मेरा चश्मा कहां है, संगीता?  
वकील - तो इसमें मारने वाली क्या बात थी?  
पत्नी - मेरा नाम रंजना है।  
पूरा कोर्ट खामोश!
7. जज - तुमने पुलिस अधिकारी की जेब में जलती माचिस की तीली क्यों रखी?  
चोर - उसने ही कहा था कि अगर जमानत चाहते हो तो पहले जेब गरम करो।  
फिर क्या .... चोर की हुई खूब पिटाई!
8. संता ने बंता से कहा - 20 सालों में, आज पहली बार अलार्म से सुबह-सुबह मेरी नींद खुल गई।  
बंता - क्यों, क्या तुम्हें अलार्म सुनाई नहीं देता था?  
संता - नहीं आज सुबह मुझे जगाने के लिए मेरी बीवी ने अलार्म घड़ी फेंक कर सिर पर मारी।

सौजन्य: व्हाट्सैप



## अंतरिक्ष प्रश्नोत्तरी



पूजु चंद्रन  
ग्रुप निदेशक, टीडीएमजी

1. हमारी गैलेक्सी में सौर परिवार का स्थान किस आर्म पर है?
2. भारत द्वारा अंतरिक्ष में प्रथम दूरबीन कौन-सा है?
3. चंद्रमा पर दिखाई देनेवाला वह खनिज जिसको अपोलो 11 के कर्मीदल की याद में नाम दिया गया था।
4. चंद्रमा और पृथ्वी के बीच के गुरुत्व का अनुपात क्या है?
5. यदि ब्रह्मांड अंतहीन होता और उसमें अनंत तारे होते तो रात्रिकालीन आकाश को पूरी तरह प्रभापूर्ण रहना चाहिए। इस विरोधाभास को ..... कहा जाता है।
6. वर्ष 2015 में लिगो और विर्जो सहयोग द्वारा किस प्रतिभास के प्रेक्षणात्मक प्रमाण की घोषणा की गई थी?
7. किस ग्रह का उपग्रह है नेसो?
8. ग्रहिका पट्टी की सबसे बड़ी वस्तु?
9. किसी ब्लैक हॉल की सीमा का क्या नाम है, जिसके बाद कुछ भी जा नहीं पाता?
10. सूरज का प्रकाश पृथ्वी की सतह तक पहुंचने के लिए करीब कितना समय लेगा?

7. नेपच्यून  
8. सीरिस  
9. हॉब्स होमिंग्स  
10. 499 सेकंड

4. 1:6  
5. ओल्बर का विरोधाभास  
6. गुरुत्व का तार

1. अरिस्तो ऑम  
2. अरिस्तो  
3. अमलकलाइट

उत्तर:

## आपकी प्रतिक्रिया... हमारी प्रेरणा...

आपके द्वारा प्रेषित गृह पत्रिका “गगन” की प्रति विभाग में प्राप्त हुई। इस पत्रिका में तकनीकी, कार्यालयीन एवं राजभाषा से संबंधित गतिविधियों के साथ ही विभिन्न मनोरंजक एवं सूचनापरक लेखों को विविध साहित्य विधाओं तथा सरल एवं बोधगम्य शैली से सुसज्जित किया गया है। पत्रिका की कुछ कृतियाँ जैसे-अशक्तता एक अवस्था है, बीमारी नहीं, सामाजिक भेदभाव, छोटा लक्ष्य, माँ एवं यहाँ चेहरों पर नकाब बहुत हैं विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। कुल मिलाकर, पत्रिका में अनेक विषयरूपी रंगों का उपयोग करके इसे अत्यंत रोचक बनाया गया है। आशा है कि पत्रिका के आगामी अंकों से भी राजभाषा, हिंदी के कार्यान्वयन में आपका बहुमूल्य योगदान निरंतर प्राप्त होता रहेगा। शुभकामनाओं सहित,

**एम जी सोम शेखरन नायर**  
संयुक्त निदेशक (रा.भा.), अंतरिक्ष विभाग

दिनांक 14.08.2024 को आपके द्वारा डिजिटल माध्यम से भेजी गई हिंदी गृह पत्रिका ‘गगन’ के 57वें अंक का डिजिटल संस्करण प्राप्त हुआ। सभी तकनीकी आलेख इसरो की महत्ता का बखान करते हैं। “सामाजिक भेदभाव” नामक कविता में वर्णित दृष्टांत जीवन में अनुकरणीय है। पत्रिका में प्रकाशित “माँ” शीर्षक नामक कविता में माँ की ममता का मार्मिक चित्रण देखने को मिलता है। पत्रिका में प्रकाशित राजभाषा गतिविधियों का सचित्र वर्णन केंद्र में राजभाषा गतिविधियों को सुदृढ़त का सूचक है। पत्रिका में प्रकाशित अन्य सभी आलेख प्रेरणादायी व ज्ञानवर्धक है। ‘गगन’ के संपादकीय मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

**टी विजय शेखर**  
कनिष्ठ. अनु. अधिकारी, आइपीआरसी

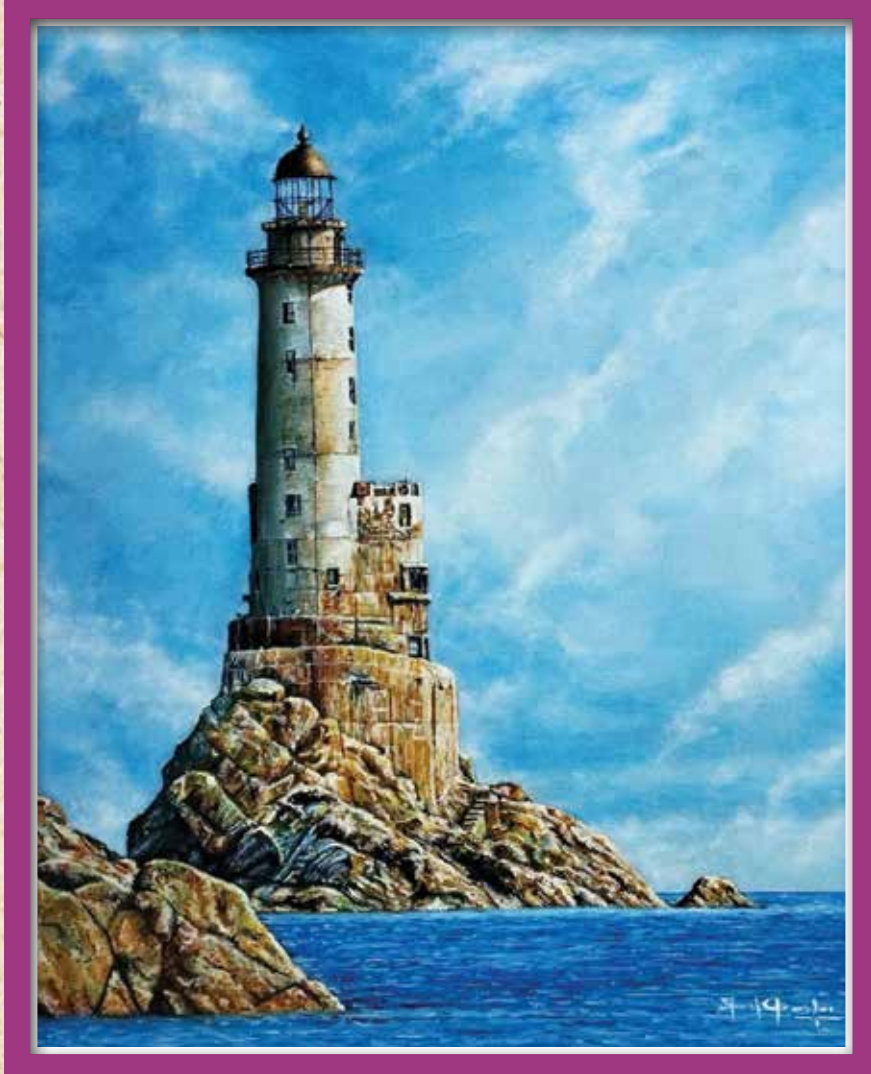
वीएसएससी द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका ‘गगन’ का 57 वां अंक हमारे कार्यालय में प्राप्त हुआ। पत्रिका की साज-सज्जा आकर्षक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं सारगर्भित एवं रोचक हैं। प्रकाशन से जुड़े समस्त अधिकारियों, एवं कर्मचारियों एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं आगामी अंक के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

**हिंदी अनुभाग**  
आइआइएसयू

आपके द्वारा प्रेषित गगन पत्रिका के 57वें अंक की डिजिटल प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का विषय वैविध्य लाजवाब है। रोचक एवं मनोरंजक सामग्रियों के साथ-साथ ज्ञानवर्धक वैज्ञानिक लेखों को शामिल करने से पाठकों को अपनी रुचि के अनुसार लेख चुनकर पढ़ने का अवसर मिलता है। पत्रिका के माध्यम से आप न केवल राजभाषा के रूप में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करते हैं बल्कि वैज्ञानिक लेखों के माध्यम से तकनीकी शब्दावलियों, बोलचाल की हिंदी के माध्यम से हिंदी भाषा के सरल एवं रोजमर्रा प्रयोगों को समझने तथा प्रश्नोत्तरी एवं अभ्यास के माध्यम से पाठकों को अपने ज्ञान का स्वमूल्यांकन- चाहे वह हिंदी भाषा से संबंधित हो या ज्ञान-विज्ञान से संबंधित- करने का अवसर प्रदान करते हैं। पत्रिका की अभिकल्पना और प्रस्तुतीकरण शैली भी सराहनीय है। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई। उत्तरोत्तर प्रगति की कामना के साथ .....

**नीतु पी टी**  
कनिष्ठ. अनु. अधिकारी, एपीईपी

# आशा की किरण



तैल चित्र (ऑयल पेंटिंग)  
(चित्रकार: श्री बीजु चंद्रन, ग्रुप निदेशक, टीडीएमजी)



हिंदी अनुभाग, वीएसएससी द्वारा प्रकाशित;  
मेसर्स ऑरेंज प्रिंटर्स प्राईवेट लिमिटेड, तिरुवनंतपुरम-1 द्वारा मुद्रित (0471 4010905)